RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 14	अंक : 7	मुम्बई, अक्टूबर 2024	पृष्ठ : 32	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 14	ISSUE : 7	MUMBAI, OCTOBER 2024	PAGES : 32	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2550

तीर्थंकर श्री १००८ महावीर भगवान की मोक्षस्थली पावापुरी जी, बिहार

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 14 अंक 7 अक्टूबर 2024

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक

श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

संपादकीय सलाहकार

डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद
डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

E-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 00121010110008627 में किसी भी शाखा में निःशुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2550

प्रेम, करुणा, भाईचारे के दीपक जलाएं, अंत:करण प्रकाशित करें 7

प्राकृत और पालि भाषा हमेशा से क्लासीकल थीं : घोषित आज हुई हैं 9

अंतर्मन का दीप जलाने की शिक्षा देता है भगवान महावीर का निर्वाण पर्व दीपावली 13

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज आचार्य पद प्रतिष्ठापन 14

आत्मावलोकन तथा तप साधना के प्रतीक संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज 15

दिगंबर जैनधर्म सिद्ध- तीर्थराज सम्मेदशिखर प्रमाण ऐतिहासिक 17

ज्ञानमती माताजी की कृतियाँ 19

पर्वराज पर्युषण महापर्व के पावन अवसर पर दिगम्बर जैन समाज द्वारा प्राप्त सहायता 25

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

तीर्थ एवं समाज में अन्योन्याश्रित संबंध

इन पृष्ठों पर हम विगत अनेक माहों से तीर्थों के बारे में चर्चा कर रहे हैं। दिवाली के ठीक पहले हम महावीर के भक्तों एवं महावीर की निर्वाण भूमि दोनों की बात करेंगे। आज भगवान महावीर की निर्वाण भूमि पावापुरी जी की प्रसिद्धि उनके भक्तों की भक्ति एवं समर्पण के कारण ही है वरना वह भी स्मृति के गर्त में खो जाती।

भारत सरकार ने देश के अल्पसंख्यक समुदायों (जैन, बौद्ध, पारसी, सिख, ईसाई एवं मुसलमान) के हितों की रक्षा एवं उत्थान हेतु अल्पसंख्यक आयोग का गठन किया है। आपकी तीर्थक्षेत्र कमेटी के सतत प्रयासों एवं पत्राचार के परिणाम स्वरूप गत 27 सितम्बर को प्रथम बार जैन समाज को आयोग ने अपनी समस्याओं को प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया। विभागीय मंत्री श्री जार्ज कुरियन एवं आयोग के अध्यक्ष श्री इकबाल सिंह लालपुरा जी ने जैन समाज के प्रतिनिधियों को गम्भीरता पूर्वक सुना तथा उनके तीर्थों पर अतिक्रमण, विकास आदि से सम्बद्ध समस्याओं को आयोग के माध्यम से निराकृत कराने का सुझाव किया। आपने आश्वस्त किया कि आयोग को प्राप्त विधाई शक्तियों का उपयोग अपने क्षेत्रों के संरक्षण हेतु करें।

विभिन्न चर्चाओं में आपने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा अल्पसंख्यकों के कल्याण की अनेक योजनायें प्रवर्तित की गई हैं। समाज को इन योजनाओं का लाभ लेना चाहिए। इनके क्रियान्वयन में बाधक बन रही समस्याओं को आयोग के संज्ञान में लायें जिससे उनको प्रशासनिक स्तर पर निराकृत किया जा सके। यह प्रथम अवसर था जब सम्पूर्ण आयोग जैन समाज के प्रतिनिधियों के साथ उपस्थित था एवं जैन तीर्थों की समस्याओं के निराकरण हेतु तत्पर भी था।

मेरा समस्त तीर्थों के पदाधिकारियों से अनुरोध है कि वे अवसर का लाभ उठाकर अपने-अपने तीर्थों की भूमि का सम्यक् दस्तावेजीकरण करा लें, भूमि क्षेत्र कमेटी के नाम पर ही होनी चाहिए। क्षेत्र कमेटी/न्यास पंजीकृत होना चाहिए एवं कम्प्यूटर अभिलेखों में भूमि क्षेत्र के नाम पर ही दर्ज होनी चाहिए। यदि क्षेत्र पर कोई अतिक्रमण है तो सीमांकन कराकर उसे अतिक्रमण मुक्त कराने में आयोग का सहयोग लिया जा सकता है।

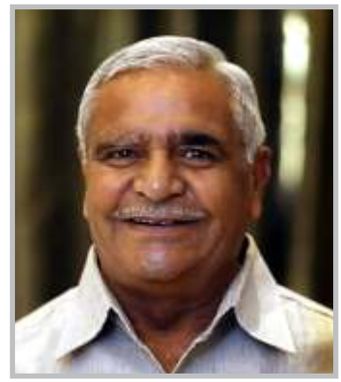

समाज के निम्न एवं मध्यमवर्गीय (आय की दृष्टि से) युवाओं की शिक्षा, स्वरोजगार आदि के क्षेत्रों में भी शासन की योजनाओं का लाभ लेना ही चाहिए। वर्तमान में सम्यक आवेदन न प्राप्त होने पर आबंटन निरस्त कर अन्य वर्ग को स्थानान्तरित कर दिया जाता है।

प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिल जाना भी एक उपलब्धि है। हमें इस अवसर का भी लाभ लेना चाहिए। प्राकृत भाषा एवं साहित्य से सम्बद्ध विविध पक्षों, प्राकृत की प्राचीन पाण्डुलिपियों के संरक्षण, अनुवाद, आलोचनात्मक अध्ययन प्रकाशन आदि की अनेक योजनाओं का निर्माण कर सक्षम विद्वानों के मध्यम से विभिन्न एजेन्सियों को भेजना चाहिए। नवीन घोषणा के परिप्रेक्ष्य में उन्हें प्राथमिकता प्राप्त होगी। विगत माहों में हमने तीर्थक्षेत्र गुल्लक योजना एवं तीर्थ रक्षा कलश की चर्चा की थी। पर्यूषण पर्व की पूर्णता के साथ ही अब वर्षायोग निष्ठापन भी आ रहा है। मेरा एक बार पुनः आग्रह है कि आप इन माध्यमों से संकलित राशि शीघ्र ही हमारे केन्द्रीय कार्यालय में (मुम्बई) भिजवाने का कष्ट करें।

आपकी अपनी भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने वाले है इस प्रसंग को कैसे अविस्मरणीय बनाये, एतदर्थ आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

भगवान महावीर के 2551वें निर्वाण दिवस पर आप सबको सुखद समृद्धिदायक नववर्ष की मंगल कामनाएँ।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

बंधुओं-भगनियों
सादर जय जिनेन्द्र,

भगवान महावीर के 2551 वें निर्वाण दिवस (दीपावली पर्व) की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं !

अत्यंत हर्ष एवं गौरव के क्षण हैं कि वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी का 2550 वाँ निर्वाण महोत्सव वर्ष संपन्न हो रहा है जिसे आज सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय स्तरीय रूप से मनाया जा रहा है। चूंकि भगवान महावीर सिर्फ जैनों के ही नहीं जन-जन के भगवान हैं। भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांत सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण के लिए हैं देश-विदेश न सिर्फ इन सिद्धांतों से प्रभावित हो रहा है अपितु उन्हें अपना भी रहा है।

भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण महोत्सव की पावन बेला में मेरा सभी समाजजनों से निवेदन है कि दीपावली के इस पावन अवसर पर एक दीप सभी तीर्थों के संरक्षण के लिए भी जलाएं। वास्तव में हमारे तीर्थ ही हैं जो महावीर द्वारा जलाये गए दीप की लौं की आज भी बरकरार रखे हैं, और हमें तीर्थों की इस लौं को आगे आने वाले समय के लिए बरकरार रखना है।

वर्तमान परिवेश में शास्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखर जी केस की सुप्रीम कोर्ट में अंतिम निर्णय के लिए सुनवाई चल रही है जिसके लिए अपने समाज से सहयोग की अपील की है हमें प्रसन्नता है कि हमारी अपील को महत्त्व देते हुए भारत के विभिन्न प्रान्तों के राष्ट्रीय समितियों, मंदिरों, समाज एवं व्यक्तिगत रूप तीर्थसंरक्षण के लिए अपनी अपनी सहायता प्रदान की है जिनकी सूची भी इस अंक में प्रकाशित है आप सभी दान-दातारों के प्रति हम भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से धन्यवाद ज्ञापित करते हैं, चूंकि इस केस में अभी और समय लग सकता है जिसके लिए हमें आप सभी के सहयोग की आवश्यकता है।

मेरा सभी समाज श्रेष्ठियों महानुभावों से निवेदन है कि श्री सम्मेदशिखर जी तीर्थ हमारा है और इसके संरक्षण के लिए हमें ही आगे आना है अतः आप सभी शिखरजी के महत्वत्ता एवं इस तीर्थ की पावनता को समझते हुए सकल दिगम्बर जैन समाज की एकता का परिचय देते हुए भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को सशक्त करें ताकि हम मजबूती के साथ शिखरजी के संरक्षण-संवर्धन में अपना सर्वस्व समर्पित कर सकें।

अंत में एक बार पुनः आप सभी को भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं हम सभी के जीवन में सुख-समृद्धि आये, और भगवान महावीर के पथ पर निरंतर अग्रसित होते हए मोक्ष रुपी लक्ष्मी को प्राप्त होवें, ऐसी मंगलकामनाओं के साथ,

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

यह दीपावली कुछ खास है

भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण वर्ष के कारण यह दिवाली (दीपावली) विशेष महत्त्व की है। यद्यपि हर वर्ष भगवान महावीर के निर्वाण दिवस की स्मृति स्वरूप मनाया जाने वाला जन-जन का त्यौहार दिवाली हमेशा खुशियाँ लेकर आता है। भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाला हर परिवार इसे अपने-अपने तरीके से उत्साह से मनाता भी है किन्तु भगवान महावीर के निर्वाण के 2550 वर्ष पूर्ण होने के कारण हम इस बार इसे अधिक उत्साह से मनायेंगे।

इस वर्ष अनेक चिन्तनीय प्रसंगों के बावजूद 3 अच्छी खबरें भी आई हैं:-

1. भारत सरकार ने 13 मार्च 2024 को देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में 25 करोड़ के अनुदान के साथ जैन अध्ययन केन्द्र (Centre for Jain Studies) के स्थापना की घोषणा की। इसके साथ ही 40 करोड़ के अनुदान से गुजरात वि.वि. अहमदाबाद में जैन पाण्डुलिपि अध्ययन केन्द्र स्थापित करने की घोषणा की है। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा विस्तृत योजना बनाकर भेजी जा चुकी है भूमि चयन, आबंटन आदि की सभी औपचारिकताएँ पूर्ण हो चुकी हैं। आशा है कि दीपावली तक इसकी विधिवत स्वीकृति प्राप्त होकर भवन निर्माण का कार्य भी 2024 में ही शुरू हो जायेगा।

2. भारत सरकार ने ही 12 अक्टूबर 2004 को कतिपय भाषाओं को शास्त्रीय भाषा (Classical Language) का दर्जा देने की शुरुआत की थी। इसके अन्तर्गत निम्नांकित भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का विशेष दर्जा उनके सम्मुख अंकित तिथि को प्रदान किया जा चुका है।

1. तमिल	-	12.10.2004
2. संस्कृत	-	25.11.2005
3. तेलुगू	-	31.10.2008
4. कन्नड़	-	31.10.2008
5. मलयालम	-	08.08.2013
6. उड़िया	-	01.03.2014

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के अन्तर्गत गठित Linguistic Expert Committee (L.E.C.) ने 2013-2023 में प्राप्त प्रस्तावों की समीक्षा एवं विश्लेषण के उपरान्त अपनी बैठक दिनांक 25.07.24 में शास्त्रीय भाषा घोषित करने की शर्तों को संशोधित करने के उपरान्त निम्नांकित 5 भाषाओं को शास्त्रीय भाषा घोषित करने की अनुशंसा की थी। इस अनुशंसा के अनुरूप 03.10.24 को श्री नरेन्द्र जी मोदी की अध्यक्षता में सम्पन्न केन्द्रीय मंत्री परिषद की बैठक में 5 भाषाओं को शास्त्रीय भाषा घोषित किया गया है।

1. मराठी
2. पाली
3. प्राकृत
4. असमिया
5. बंगाली

शास्त्रीय भाषा वह भाषा होती है जो ऐतिहासिक रूप से समृद्ध होती है और साहित्य, संस्कृति और ज्ञान का एक बड़ा खजाना रखती है। भारत में शास्त्रीय भाषाओं का दर्जा देने के लिए कुछ मानदंड निर्धारित हैं, जैसे कि भाषा की प्राचीनता, साहित्यिक परम्परा और विकसित व्याकरण आदि।

संस्कृत के शास्त्रीय भाषा बनने के बाद प्राप्त अवसरों एवं विकास से समाज विदित ही है। अब प्राकृत को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिलने के बाद अनेक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। जैसे

1. संस्कृति और पहचान: शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिलने से प्राकृत भाषा की सांस्कृतिक पहचान मजबूत होगी और इसे संरक्षण मिलेगा।

2. शिक्षा और अनुसंधान: इसे उच्च शिक्षा संस्थानों में अधिक मान्यता मिलेगी, जिससे इसके अध्ययन और अनुसंधान को बढ़ावा मिलेगा।

3. भाषाई समृद्धि: नई पीढ़ी को अपनी ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत से जुड़ाव होगा।

4. सरकारी सहायता: प्राकृत को विशेष अनुदान और संसाधनों की उपलब्धता होगी, जिससे इनके विकास में मदद मिलेगी।

5. संवाद और साहित्य: प्राकृत के साहित्यिक और कलात्मक रूपों को संरक्षित करने में मदद मिलेगी, जिससे नई रचनाएँ और संवाद स्थापित होंगे।

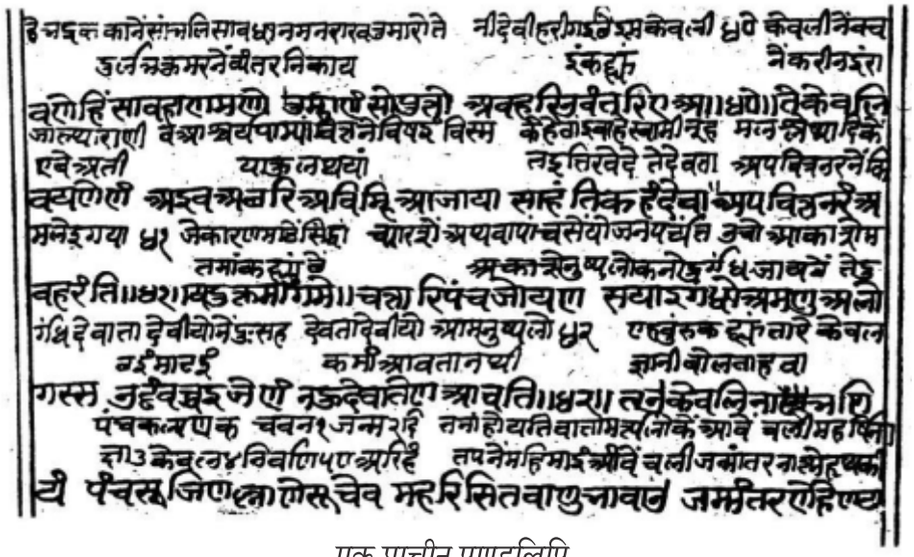

एक प्राचीन पाण्डुलिपि

इस प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिलने से भाषा के विकास का एक अवसर हमें मिला है। महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा प्रतिवर्ष एक प्राकृत विद्वान को राष्ट्रीय पुरस्कार तो मिलता ही है। एक युवा को भी पुरस्कृत किया जाता है किन्तु अब इसके अध्ययन के नये क्षितिज भी सामने आयेंगे। मात्र साहित्यिक ही नहीं अनेक वैज्ञानिक विषयों जैसे गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तु आदि से सम्बद्ध शताधिक ग्रंथ प्राकृत भाषा में रचित होकर संरक्षण, अनुवाद की बाट जोह रहे हैं।

प्राकृत एक ऐसी निराली भाषा है, जिससे भारतीय भाषाओं के आंतरिक संबंधों को समझना आसान हो जाता है। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में प्राकृत के अनेक शब्द, रूप और प्रवृत्तियां विद्यमान है। प्राकृत केवल जैन आगमों की भाषा ही नहीं, अपितु विशाल भारतवर्ष के प्राणों में स्पंदित होने वाली हजारों वर्ष पुरानी जनभाषा रही है तभी तो अनेक संस्कृत नाटकों में जन सामान्य के प्रतिनिधि पात्र प्राकृत भाषा में ही बोलते है। जैन समाज और प्राकृत प्रेमी लंबे समय से प्राकृत को शास्त्रीय भाषा की मान्यता की मांग कर रहे थे।

मेरा सुझाव है कि केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के समान प्राकृत वि.वि. की स्थापना देश के किसी केन्द्रीय स्थान पर की जाये जहाँ से प्राकृत के अध्ययन अनुसंधान की योजनाओं में समन्वय हो सके। यह प्राकृत के विकास हेतु जरूरी है। वहाँ साहित्य, व्याकरण, विज्ञान, पाण्डुलिपि संरक्षण, अनुवाद आदि का कार्य योजनाबद्ध रूप से हो सकेगा। विज्ञान की समझ रखने वाले विद्वानों की प्राकृत साहित्य में गति न होने के कारण यह पक्ष उपेक्षित ही रहा है उदाहरणार्थ प्राकृत भाषा के ग्रंथों में गणितीय सामग्री विपुल परिमाण में संष्लिष्ट रूप में विद्यमान है किन्तु वह भारतीय गणित में यथेष्ट महत्त्व न पा सकी है। शासन से संपोषित परियोजनाओं के माध्यम से उसे प्रकाश में लाया जा सकेगा।

3. म.प्र. शासन ने इसी अक्टूबर माह में जैन कल्याण बोर्ड के गठन की घोषणा की है। इस बोर्ड के माध्यम से प्रदेश में जैन इतिहास, संस्कृति एवं तीर्थों के संरक्षण में मदद मिलेगी। जैन मुनियों के विहार के समय उनको सम्यक सुरक्षा तथा शासकीय भवनों में उनके रात्रि विश्राम की सुविधा आदि उपलब्ध हो सकेगी। जैन विद्यार्थियों को उच्चतर अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति एवं जैन संस्थानों को अपनी योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु अनुदान आदि प्राप्त करने में सुविधा होगी।

सम्पूर्ण प्रदेश में विकीर्ण जैन पुरासम्पदा के संरक्षण एवं जैन तीर्थों के चतुर्दिक यात्री-सुविधाओं के विकास हेतु स्थानीय कमेटियों को इसका लाभ लेना चाहिए। जैन तीर्थों को परस्पर सम्बद्ध करने हेतु बेहतर सड़क सुविधाओं, पेयजल व्यवस्था, निर्बाध विद्युत आपूर्ति, मध्यवर्ती स्थानों पर साधु रात्रि विश्राम स्थलों को चिन्हित कर उनका रख-रखाव जैसे कार्य आंचलिक स्तर पर किये जा सकते हैं।

दीपावली पर दीपक जलाते समय राज्य एवं केन्द्र शासन को एतदर्थ धन्यवाद देवें तथा यह भी सुनिश्चित करें कि किसी भी जैन बन्धु के घर अंधेरा न रहे, उसको दोनों समय भोजन की असुविधा न रहे, उसके बच्चे शिक्षा एवं परिजन स्वास्थ सुविधाओं से वंचित न रहे। यही साधर्मी वात्सल्य है।

दीपावली पर मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

प्रेम, करुणा, भाईचारे के दीपक जलाएं, अंत:करण प्रकाशित करें

-डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

भगवान महावीर स्वामी का 2550 वां निर्वाणोत्सव देश-विदेश में श्रद्धा पूर्वक धूमधाम से मनाया गया। इस वर्ष हम 2551वां निर्वाण महोत्सव मना रहे हैं।

वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी के अहिंसा, शांति, सद्भावना , अपरिग्रह, स्याद्वाद-अनेकांत के दर्शन की तत्कालीन समय में जितनी आवश्यकता थी उससे अधिक आवश्यकता और प्रासंगिकता मौजूदा समय में है। भगवान महावीर जैन धर्म के वर्तमानकालीन 24वें तीर्थंकर हैं। महावीर स्वामी ने कार्तिक कृष्ण अमावस्या को निर्वाण अर्थात् मोक्ष प्राप्त किया था। जैन परंपरा में दीपावली, महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस के रूप में मनाई जाती है। जहां कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन भगवान महावीर ने मोक्ष को प्राप्त किया था वहीं इसी दिन संध्याकाल में उनके प्रमुख शिष्य, गणधर गौतम स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुयी थी।

जैनधर्म के लिए यह महापर्व विशेष रूप से त्याग और तपस्या के तौर पर मनाया जाता है। इसलिए इस दिन जैन धर्मावलंबी भगवान महावीर की विशेष पूजा करके प्रातः बेला में निर्वाण लाडू चढाकर स्वयं उन जैसा बनने की भावना भाते हैं। दिवाली यानि महावीर के निर्वाणोत्सव वाले दिन पूरे देश के जैन मंदिरों में विशेष पूजा, निर्वाण लाडू महोत्सव का आयोजन भव्य रूप में किया जाता है। गोधूलि बेला में अपने-अपने घरों में महावीर भगवान की विशेष पूजन के साथ दीप जलाते हैं।

भगवान महावीर के बताये हुए मार्ग पर चलने से हम स्वस्थ, समृद्ध एवं सुखी समाज की संरचना कर सकते हैं। परमाणु खतरों और आतंकवाद से जूझ रही दुनिया को भगवान महावीर के अहिंसा और शांति के दर्शन से ही बचाया जा सकता है।

दीपमालिकायें केवलज्ञान की प्रतीक : दीपमालिकायें केवलज्ञान की प्रतीक हैं। सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो, अंधकार का नाश हो, इस भावना से दीपमालायें जलाने की परंपरा रही है। दीपावली के पूर्व कार्तिक त्रयोदशी के दिन भगवान महावीर ने बाह्य समवसरण लक्ष्मी का त्याग कर मन-वचन-काय का निरोध किया। वीर प्रभु के योगों के निरोध से त्रयोदशी धन्य हो उठी, इसीलिए यह तिथि 'धन्य-तेरस' के नाम से विख्यात हुई, इसे आज अधिकांश लोग 'धन-तेरस' के रूप में जानते हैं।

रूढ़ियों, कुरीतियों और भ्रम से निकलें : आज दीपाली के साथ जैन समाज में अनेक रुढ़ियां प्रवेश कर गयी हैं।हम सभी रूढ़ियों, कुरीतियों और भ्रम से उस पार जाकर सत्य की पहचान करें और सत्य के प्रकाश से अपने को प्रकाशित करें। तभी महावीर स्वामी का निर्वाण महोत्सव, गौतम गणधर का केवलज्ञान कल्याणक सार्थक होगा तथा हम सभी के द्वारा की जाने वाली पूजन, भक्ति, अभिषेक, शांतिधारा, अर्चना भी सफल होगी।

अंत:करण प्रकाशित करें : यह पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हम

बाहरी प्रकाश के साथ-साथ अंतःकरण प्रकाशित करें। अपने आचरण, व्यवहार, वात्सल्य, सहकार सौहार्द को परस्पर में बांटकर स्व-पर जीवन को भी मधुर बनाएं। प्रेम, करूणा, भाईचारे के दीपक जलाकर सभी में अपनत्व का संचार करें।

प्राणियों तथा पर्यावरण की रक्षा करें : भगवान महावीर नें संयम आधारित जीवन शैली की बात की, व्यक्तिगत भोग और उपभोग के सीमाकरण की बात की, उन्होंने कहा पदार्थ सीमित है, वो असीम इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकते। आज इस भागदौड़ भरी जिंदगी में हमें भगवान महावीर के उपदेशों पर चलते हुए भ्रष्टाचार मिटाने की कोशिश करनी चाहिए तथा सत्य व अहिंसा का मार्ग चुनकर दीपावली पर पटाखों, आतिशबाजी का त्याग करके जीव-जंतुओं, प्राणियों तथा पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। यदि हम यह कर सके तो सही मायनों में भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव मनाने की सार्थकता सिद्ध कर सकेंगे।

भगवान महावीर का मार्गदर्शन, उनके सिद्धान्त पर्यावरण की शुद्धि के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। कोरोना महामारी के समय में भगवान महावीर का जैन दर्शन एवं शिक्षाओं की ओर समूची दुनिया का ध्यान आकृष्ट हुआ है। भगवान महावीर की शिक्षाएं आर्थिक असमानता को कम करने की आवश्यकता के अनुरूप हैं।

पहले से अधिक प्रासंगिक महावीर के विचार : भगवान महावीर के उपदेश आज पहले से अधिक अत्यंत समीचीन और प्रासंगिक हैं। भगवान महावीर की शिक्षाओं में पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास, युद्ध और आतंकवाद के जरिए हिंसा, धार्मिक असहिष्णुता तथा गरीबों के आर्थिक शोषण जैसी सम-सामयिक समस्याओं के समाधान पाए जा सकते हैं। भगवान महावीर ने 'अहिंसा परमो धर्मः' का शंखनाद कर 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' की भावना को देश और दुनिया में जाग्रत किया। 'जियो और जीने दो' अर्थात् सह-अस्तित्व, अहिंसा एवं अनेकांत का नारा देने वाले महावीर स्वामी के सिद्धांत विश्व की अशांति दूर कर शांति कायम करने में समर्थ हैं।

वीर निर्वाण संवत् सबसे प्राचीन : वीर निर्वाण संवत् सबसे पुराना है। यह हिजरी, विक्रम ईस्वी, शक आदि से अधिक पुराना है। वीर निर्वाण संवत्, विक्रम संवत्, शक संवत्, शालिवाहन संवत्, ईस्वी संवत्, गुप्त संवत्, हिजरी संवत् आदि से भी यह संवत् प्राचीन है। ईसा से 527 वर्ष पूर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या को दीपावली के दिन ही भगवान महावीर का निर्वाण हुआ था। उसके एक दिन बाद कार्तिक शुक्ल एकम से भारतवर्ष का सबसे प्राचीन संवत् 'वीर निर्वाण संवत्' प्रारंभ हुआ था।

जैन "वीर निर्वाण संवत्" भारत का प्रमाणिक प्राचीन संवत् है और इसकी पुष्टि सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता डॉ गौरीशंकर हीराचंद ओझा द्वारा वर्ष 1912 में अजमेर जिले में बडली गाँव (भिनय तहसील, राजस्थान) से प्राप्त ईसा से 443 वर्ष पूर्व के "84 वीर संवत्" लिखित एक प्राचीन प्राकृत युक्त ब्राह्मी शिलालेख से की गयी है। यह शिलालेख अजमेर के 'राजपूताना संग्रहालय' में संगृहीत है। प्राचीन व प्रमाणिक 2551वां जैन "वीर निर्वाण संवत्" 1 नवम्बर 2024 से शुरू होगा। जैन वीर निर्वाण संवत् भारत का प्रमाणिक संवत् है। जैन परंपरा में भगवान महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव के अगले दिन से नए वर्ष का शुभारंभ माना जाता है।

यद्यपि युद्ध नहीं कियो, नाहिं रखे असि-तीर।
परम अहिंसक आचरण, तदपि बने महावीर।।

अनेक समस्याओं का समाधान : आज विश्व के सामने उत्पन्न हो रहीं सुनामी, ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदाएं,कोरोना महामारी, हिंसा का सर्वत्र होने वाला ताडंव, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, वैमनस्य, युद्ध की स्थितियां, प्रकृति का शोषण आदि समस्याएं विकराल रूप ले रही हैं। ऐसी स्थिति में कोई समाधान हो सकता है तो वह महावीर स्वामी का अहिंसा, अपरिग्रह और समत्व का चिंतन है।

अहिंसा के अवतार भगवान महावीर स्वामी के 2551वे निर्वाण-महामहोत्सव की आप सभी को अशेष शुभकामनाएं।

प्राकृत और पालि भाषा हमेशा से क्लासीकल थीं : घोषित आज हुई हैं

- प्रो फूलचन्द जैन "प्रेमी", वाराणसी

केंद्र सरकार ने प्राकृत एवं पालि जैसी प्राचीन भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान करके एक ऐतिहासिक कदम उठाया है । इस हेतु प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की नेतृत्त्व वाली केंद्र की भाजपा सरकार निश्चित रूप से बधाई की पात्र है। संस्कृति मंत्रालय ने एक पोस्टर प्राकृत भाषा में ही जारी करके यह घोषणा की है - *पागद- भासा 'सत्थीयभासा' - रूवे समणुमण्णिदा इदि।* ज्ञातव्य है कि नई दिल्ली से प्राकृत भाषा में प्रकाशित होने वाली प्रथम पत्रिका का नाम भी 'पागद-भासा' है,जो 2015 से निरंतर प्रकाशित हो रही है और इसके संपादक प्रो अनेकांत कुमार जैन हैं।

केंद्र सरकार के इस निर्णय के अनन्तर आम जनता में इन भाषाओं के प्रति दिलचस्पी भी बढ़ गई है । अतः इन भाषाओं की क्या विशेषता है यह जानना भी बहुत आवश्यक है।

प्राचीनकाल से ही समृद्ध रूप में प्रतिष्ठित रही संस्कृत-भाषा और इसके विशाल साहित्य के सार्वभौमिक महत्त्व से तो प्रायः सभी सुपरिचित हैं, किन्तु अतिप्राचीन काल से जनभाषा के रूप में प्रचलित मागधी, अर्धमागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री, अपभ्रंश आदि रूपों में जीवन्त प्राकृत भाषाओं और इनके विशाल साहित्य से भारतीय जनमानस उतना परिचित नहीं है, जबकि प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान, तत्त्वज्ञान, संस्कृति और इतिहास तथा लोक-परम्पराओं आदि के सम्यक् ज्ञान हेतु प्राकृत भाषा और इसके विविध एवं विशाल साहित्य का अध्ययन अपरिहार्य है।

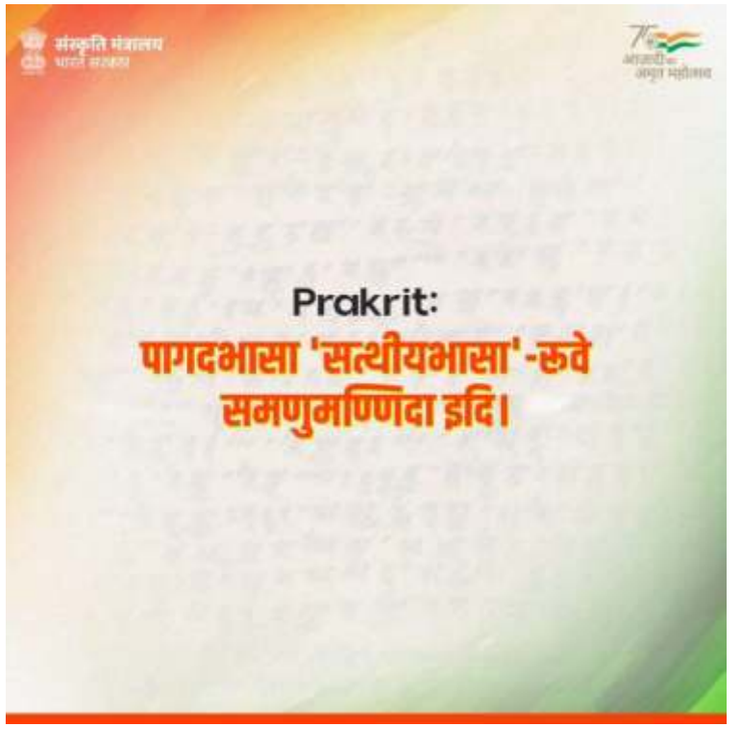

प्राकृत मूलतः लोकजीवन और लोकसंस्कृति की भाषा है। इस भाषा के साहित्य में मानव जीवन की स्वाभाविक वृत्तियों और नैसर्गिक गुणों की सहज-सरल अभिव्यक्ति हुई है। सम्राट् अशोक और कलिंग-नरेश खारवेल आदि के अनेक प्राचीन शिलालेख इसी प्राकृत भाषा और ब्राह्मीलिपि में उपलब्ध होते हैं। भाषाविदों ने भारत-ईरानी भाषा के परिचय के अन्तर्गत भारतीय आर्य शाखा परिवार का विवेचन किया है। प्राकृत इसी भाषा परिवार की एक आर्य भाषा है।

वैदिक काल में कोई ऐसी जनभाषा प्रचलित रही है, जिससे छान्दस साहित्यिक भाषा का विकास हुआ होगा। कालान्तर में इस छान्दस को भी पाणिनी ने अनुशासित कर इसमें से विभाषा के तत्त्वों को निकालकर लौकिक संस्कृत को जन्म दिया। वैदिक तथा परवर्ती संस्कृत के वे शब्द जिनमें 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग हुआ है, प्राकृत रूप है। इस प्रकार छान्दस में प्राकृत भाषा के तत्त्वों का समावेश स्पष्ट करता है कि यह भाषा लौकिक संस्कृत की अपेक्षा प्राचीनतर है।

प्राकृत भाषा और उसका महत्त्व: भाषा स्वभावतः गतिशील तत्त्व है। भाषा का यह क्रम ही है कि वह प्राचीन तत्त्वों को छोड़ती जाए एवं नवीन तत्त्वों को ग्रहण करती जाए। प्राकृत भाषा भारोपीय परिवार की एक प्रमुख एवं प्राचीन भाषा है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल में वैदिक भाषा का विकास तत्कालीन लोकभाषा से हुआ। प्राकृत भाषा का स्वरूप तो जनभाषा का ही रहा। प्राकृत एवं वैदिक भाषा में विद्वान् कई समानताएँ स्वीकार करते हैं। इससे प्रतीत होता है कि वैदिक भाषा और प्राकृत के विकसित होने से पूर्व जनसामान्य की कोई एक स्वाभाविक समान भाषा रही होगी जिसके कारण इसे 'प्राकृत' भाषा का नाम दिया गया।

मूलतः प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्' अथवा "प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम्" है। १०वीं शती के विद्वान् कवि राजशेखर ने प्राकृत को 'योनि' अर्थात् सुसंस्कृत साहित्यिक भाषा की जन्मस्थली कहा है।

वस्तुतः संस्कृत प्राचीन होते हुए भी सदा मौलिक रूप धारण करती है, इसके विपरीत प्राकृत चिर युवती है और जिसकी सन्तानें निरन्तर विकसित होती जा रही हैं।

महाकवि वाक्पतिराज (आठवीं शताब्दी) ने प्राकृत भाषा को जनभाषा माना है और इससे ही समस्त भाषाओं का विकास स्वीकार किया है। गउडवहो में वाक्पतिराज ने कहा भी है-

सयलाओ इमं वाआ विसन्ति
एन्तो य णेंति वायाओ।
एन्ति समुद्दं चिय णेंति सायराओ
च्चिय जलाइं ।। ९३।।

अर्थात् 'सभी भाषाएं इसी प्राकृत से निकलती हैं और इसी को प्राप्त होती हैं। जैसे सभी नदियों का जल समुद्र में ही प्रवेश करता है और समुद्र से ही (वाष्प रूप में) बाहर निकलकर नदियों के रूप में परिणत हो जाता है।' तात्पर्य यह है कि प्राकृत भाषा की उत्पत्ति अन्य किसी भाषा से नहीं हुई है,

अपितु सभी भाषायें इसी प्राकृत से ही उत्पन्न हैं।

ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में प्राकृत भाषा गाँवों की झोपड़ियों से राजमहलों और राजसभाओं तक समादृत होने लगी और वह अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम चुन ली गयी थी। लोकभाषा जब जन-जन में लोकप्रिय हो जाती है तथा जब उसकी शब्द-सम्पदा बढ़ जाती है, तब वह काव्य की भाषा भी बनने लगती है। प्राकृत भाषा को यह सौभाग्य दो प्रकार से प्राप्त है। एक तो इसमें विशाल आगम और उनका व्याख्या साहित्य उपलब्ध है और दूसरा इसमें विपुल मात्रा में कथा, काव्य एवं चरितग्रन्थ आदि लिखे गये हैं, जिनमें काव्यात्मक सौन्दर्य और मधुर रसात्मकता का समावेश है। साहित्य जगत् में काव्य की प्रायः सभी विधाओं-महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक-काव्य आदि को प्राकृत भाषा ने विविध रूपों में समृद्ध किया है। इस साहित्य ने प्राकृत भाषा को प्राचीनकाल से अब तक प्रतिष्ठित रखा है।

प्राकृत भाषा का माधुर्य : एक समय तो प्राकृत भाषा का ऐसा स्वर्ण युग अर्थात् साम्राज्य रहा है कि मधुर, मधुरतर विषयों की अभिव्यक्ति में प्राकृत भाषा का स्थान सर्वोच्च रहा है। यही कारण है कि तत्कालीन श्रेष्ठ महाकवियों ने प्राकृत को अपने महाकाव्यों की रचना का मुख्य माध्यम बनाया है। नौ रसों में शृंगार सर्वाधिक मधुर है और तत्कालीन विद्वानों का यही निर्णय था कि शृंगार के अधिष्ठाता देवता कामदेव की केलिभूमि प्राकृत ही है। उस समय के लोग यह घोषणा करने में बहुत ही गौरव का अनुभव करते थे कि -

अमिअं पाउअकव्वं पढिअं सोउं अ जे ण आणन्ति।
कामस्स तत्ततन्तिं कुणन्ति ते कहं ण लज्जन्ति।।गा.स. १/२।।

अर्थात्, अमृतभूत 'प्राकृत-काव्य' को जो न पढ़ना जानते हैं, न सुनना ही, उन्हें काम की तत्त्वचिन्ता (वार्ता) करते लज्जा क्यों नहीं आती? यह उद्घोषणा केवल प्राकृत के पण्डितों की ही नहीं थी, अपितु संस्कृत के शीर्षस्थ विद्वानों ने की थी और वे स्वयं प्राकृत भाषा के उत्कृष्ट प्रशंसक भी थे।

संस्कृत के यायावर महाकवि राजशेखर को कौन संस्कृतज्ञ नहीं जानता, जिन्होंने भी उस समय प्राकृत के समक्ष संस्कृत को गौण ठहरा दिया और अपने प्रसिद्ध प्राकृत सट्टक 'कर्पूरमंजरी' में प्राणोन्मेषिणी प्राकृत-भाषा का समर्थन करते हुए कहा है -

परुसा सक्कअ बन्धा पाउअ बन्धोवि होउ सुउमारो।
पुरुसमहिलाणं जेत्तिअमिहन्तरं तेत्तिअमिमाणं।। कर्पूरमंजरी।।

अर्थात्, संस्कृतबद्ध काव्य कठोर-कर्कश होते हैं, किन्तु प्राकृतबद्ध काव्य ललित और कोमल। यानी, परुषता संस्कृत की और सुकुमारता प्राकृत की मौलिक विशेषता है। दोनों में उतना ही अन्तर है, जितना पुरुष और स्त्री में अर्थात् संस्कृत भाषा पुरुष के समान कठोर तो प्राकृत भाषा स्त्रियों के समान कोमल/सुकुमार होती है।

मुनि जयवल्लह (जयवल्लभ) ने भी अपने प्रसिद्ध प्राकृत काव्य ग्रन्थ 'वज्जालग्ग' में प्राकृत की संस्कृतातिशायी श्लाघा करते हुए कहा है -

ललिए महुरक्खरए जुवईजणवल्लहे ससिंगारे ।संते पाइअकव्वे को सक्कइ सक्कअं पढिउं।। २९।।

अर्थात् ललित, मधुर अक्षरों से युक्त युवतियों के लिए मनोरम एवं प्रीतिकर तथा श्रृंगार रस से ओत-प्रोत प्राकृत-काव्य के रहते हुए कौन संस्कृत-काव्य पढ़ना चाहेगा ?

प्राकृत भाषाओं की लोकप्रियता और माधुर्य का सहज ज्ञान हमें संस्कृत के लाक्षणिक ग्रन्थों में उदाहरण के रूप में उद्धृत प्राकृत गाथाओं एवं संस्कृत भाषा के समृद्ध नाट्य साहित्य में उपलब्ध विविध प्राकृत भाषाओं के अधिकांश संवादों से हो जाता है। मम्मट (काव्यप्रकाशकार) जैसे अनेक संस्कृत के अलंकारशास्त्रियों ने भी सहजता और मधुरता के कारण प्राकृत की गाथाओं को अपने अलंकार शास्त्रों में उदाहरणों, दृष्टान्तों के रूप में अपनाकर इन्हें सुरक्षित रखा है।

इस तरह प्राकृत भाषा केवल एक भाषा-विशेष ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय संस्कृति का दर्पण तो है ही, साथ ही अपने देश के क्षेत्र या प्रदेश (देश) विशेष की अधिकांश भाषाओं का मूलस्रोत एवं अनेक क्षेत्रीय जनभाषाओं का एक बृहत् समूह है, जिसमें अनेक भाषायें समाहित हैं। यथा - मागधी, अर्ध-मागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री, पैशाची, चूलिका पैशाची, शिलालेखी और अपभ्रंश आदि हैं।

बुद्ध वचनों की पालि भाषा भी एक प्रकार की प्राकृत भाषा ही है। ये सभी एक ही विकास-धारा की विभिन्न कड़ियाँ हैं, जिनमें भारतीय संस्कृति, समाज एवं लोक-परम्पराओं की विविध मान्यताओं के साथ ही भाषा तथा विचारों का समग्र इतिहास लिपिबद्ध है।

कुछ लोग तथागत भगवान् बुद्ध-वचनों की पालि भाषा की भांति प्राकृत भाषा को मात्र जैन धार्मिक-साहित्य की भाषा कहकर अनदेखा कर देते हैं, किन्तु यह उनका दुराग्रह मात्र है। क्योंकि यदि प्राकृत भाषा मात्रा जैनागम साहित्य तक ही सीमित होती तो उक्त कथन सत्य प्रतीत होता, किन्तु प्रायः सभी परम्पराओं के भारतीय मनीषियों द्वारा व्याकरण, रस, छन्द अलंकार, शब्दकोश, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, राजनीति, धर्म-दर्शन, गणित, भूगोल, खगोल, कथा-काव्य, चरित-काव्य, नाटक-सट्टक, नीति-सुभाषित, सौन्दर्य आदि विषयों में रचा गया विशाल साहित्य प्राकृत भाषाओं में उपलब्ध है।

प्राकृत भाषा में साहित्य सृजन का यह क्रम केवल भूतकाल तक ही सीमित नहीं रहा, अपितु वर्तमान काल में आज भी इसका सृजन अबाध गति से चल रहा है। वर्तमान युग में सृजित विविध विधाओं का उपलब्ध प्राकृत साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट है कि वर्तमान समय में भी अनेक मुनि, आचार्य एवं विद्वान् प्राकृत भाषा की विविध विधाओं में तथा इससे सम्बद्ध विषयों पर हिन्दी, अंग्रेजी तथा देश की प्रायः सभी प्रादेशिक भाषाओं में रचनायें लिख रहे हैं। अतः यह भाषा एवं इसका विशाल प्राकृत साहित्य सार्वजनीन और सार्वभौमिक होते हुए हमारे राष्ट्र की बहुमूल्य धरोहर है।

प्राकृत को सम्मान प्रदान करने वाले महापुरुष और कवि : वर्तमान में प्राकृत भाषा का सबसे प्राचीन रूप जो इस समय हमें प्राप्त है, वह सम्राट अशोक और कलिंग नरेश खारवेल आदि के शिलालेखों, पालि त्रिपिटक और जैन आगम ग्रन्थों में उपलब्ध है। उसी को हम प्राकृत का उपलब्ध प्रथम रूप कह सकते हैं। अतः जो विद्वान् प्राकृत को संस्कृत का विकृत रूप या संस्कृत से उद्भूत कह देते हैं। अब उन्हें अपनी मिथ्या धारणा छोड़कर अनेक भाषाओं की जननी प्राकृत भाषा के मौलिक एवं प्राचीन स्वरूप और उसकी महत्ता को समझ जाना चाहिए।

प्राकृत भाषा को अपनाकर इसे व्यापकता प्रदान करने वाले अनेक महापुरुष हुए हैं। जैन धर्म एवं इसकी परम्परा के अनुसार तो प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर अन्तिम और चैबीसवें तीर्थंकर महावीर पर्यन्त सभी तीर्थंकरों के प्रवचनों की भाषा प्राकृत ही रही है। तीर्थंकर महावीर की वाणी रूप में उपस्थित पवित्र विशाल आगम साहित्य आज विद्यमान है।

भगवान् बुद्ध ने अपने शिष्यों को अपनी-अपनी भाषा में 'धम्म' 'सीखने की आज्ञा दी थी' (चुल्लग्ग ५/६१) जिससे प्राकृत जन भी शास्ता के उपदेशामृत का करुणमति से यथेच्छ पान कर सके, अतः महापुरुष बुद्ध की वाणी लोकभाषा थी।

तीर्थंकर महावीर और गौतमबुद्ध दोनों ने ही अपने धर्मोपदेशों का माध्यम इसी लोकभाषा प्राकृत को बनाया। तीर्थंकर महावीर के उपदेशों की भाषा को अर्द्धमागधी प्राकृत तथा गौतमबुद्ध के उपदेशों की भाषा को मागधी (पालि) कहा गया है। इन दोनों महापुरुषों ने अपने उपदेश संस्कृत भाषा में न देकर जन (लोक) भाषा प्राकृत में दिये।

अति सरल ध्वन्यात्मक और व्याकरणात्मक प्रवृत्ति के कारण यह प्राकृत भाषा लम्बे समय तक जनसामान्य के बोलचाल की भाषा बनी रही। इसीलिए भगवान् महावीर और बुद्ध ने जनता के सामाजिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के लिए अपने उपदेशों में इसी लोकभाषा प्राकृत का आश्रय लिया, जिसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, सामाजिक आदि विविधताओं से परिपूर्ण आगमिक एवं त्रिपिटक जैसे मूल आगमशास्त्रों की रचना सम्भव हुई।

दिल को छू लेने वाली अपनी बोलियों में इन महापुरुषों द्वारा प्रदत्त धर्मोपदेश का प्रथम बार सुनना साधारण जनता पर अत्यधिक गहरा प्रभाव डाल गया। इस प्रकार इन दो धर्म-संस्थापकों का आश्रय पाकर प्रान्तीय बोलियाँ भी चमक उठी और संस्कृत से बराबरी का दावा करने लगीं।

इन महापुरुषों की इस भाषायी क्रान्ति ने समाज के उस पिछड़े और उपेक्षित निम्न समझे जाने वाले व्यक्तियों के उन विभिन्न सभी वर्गों को भी आत्मकल्याण करके उच्च, श्रेष्ठ एवं संयमी जीवन जीने और समाज में सम्मानित स्थान प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया, जो समाज में हजारों वर्षों से दलित एवं उपेक्षित समझे जाने के कारण सम्मानित जीवन जीने और अमृतत्व प्राप्त करने की सोच भी नहीं सकते थे। राष्ट्रीय समाज कल्याण की अन्त्योदय और सर्वोदय जैसी कल्याणकारी भावनाओं का सूत्रपात भी ऐसे ही चिन्तन से हुआ।

पूर्वोक्त दोनों ही महापुरुषों ने अपने क्रान्तिकारी विचारों से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों की विकृतियों को दूर करके धर्म के नाम पर बाह्य क्रियाकाण्डों, मिथ्याधारणाओं के स्थान पर प्रत्येक प्राणी के लिए जीवनोत्कर्ष और आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। भाषा और सिद्धान्तों की दृष्टि से उनकी इस परम्परा को उनके अनुयायियों ने आगे भी समृद्ध रखा।

सम्राट अशोक ने भी प्राकृत को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया और अपनी सभी आज्ञाओं और धर्मलेख इसी प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में लिखवाए। प्राकृत भाषा को जनभाषा के साथ-साथ राजकाज की भाषा का भी गौरव प्राप्त हुआ और उसकी यह प्रतिष्ठा सैकड़ों वर्षों तक आगे बढ़ती रही। अशोक के शिलालेखों के अतिरिक्त देश के अन्य अनेक नरेशों ने भी प्राकृत में शिलालेख लिखवाये एवं मुद्राएँ अंकित करवाईं।

कलिंग नरेश महाराजा खारवेल द्वारा उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर के समीप उदयगिरि-खण्डगिरि की हाथीगुम्फा में प्राकृत भाषा एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण अभिलेख भी काफी महत्त्वपूर्ण है, जिसमें अपने देश "भरध-वस" (भारतवर्ष) के नाम का सर्वप्रथम प्राचीनतम उल्लेख प्राप्त होता है।

महाकवि हाल ने अपनी गाथासप्तशती में तत्कालीन प्राकृत काव्यों से सात सौ गाथाएँ चुनकर प्राकृत को ग्रामीण जीवन, सौन्दर्य-चेतना एवं रसानुभूति की प्रतिनिधि सहज-सरस और सरल भाषा बना दिया। हिन्दी के महाकवि बिहारी जैसे अनेक प्रसिद्ध महाकवियों ने इन्हीं के अनुकरण पर अपने काव्यों की रचना की।

संस्कृत नाटककारों में भास, कालिदास, शूद्रक, भवभूति, हस्तिमल्ल जैसे अनेक संस्कृत नाटककारों ने भी अपने नाटकों में अधिकांश सम्वाद प्राकृत भाषा में लिखकर प्राकृत को बहुमान प्रदान किया है।

लोकभाषा से अध्यात्म, सदाचार और नैतिक मूल्यों की भाषा तक का विकास करते हुए यह प्राकृत भाषा कवियों को आकर्षित करने लगी थी। ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में प्राकृत भाषा गाँवों की झोपड़ियों से राजमहलों की सभाओं तक आदर प्राप्त करने लगी थी। वह समाज में अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम चुन ली गयी थी।

इस तरह प्राकृत भाषा ने देश की चिन्तनधारा सदाचार, नैतिक मूल्य, लोकजीवन और काव्य जगत् को निरन्तर अनुप्राणित किया है। अतः यह प्राकृत भाषा भारतीय संस्कृति की संवाहक है। इस भाषा ने अपने को किसी घेरे में कैद नहीं किया। अपितु विशाल और पवित्र गंगा नदी के प्रवाह की तरह प्राकृत के पास जो था, उसे वह जन-जन तक बिखेरती हुई और जन-मानस में जो अच्छा लगा, उसे वह ग्रहण करती रही। इस प्रकार प्राकृत भाषा सर्वग्राह्य और सार्वभौमिक तो है ही, साथ ही भारतीय संस्कृति की अनमोल निधि और आत्मा भी है।

वर्तमान अनेक भाषाओं और लोक-बोलियों का मूल-उद्गम है प्राकृत भाषा : भाषा वैज्ञानिकों का यह अभिमत है कि महाराष्ट्री अपभ्रंश से मराठी और कोंकणी; मागधी अपभ्रंश की पूर्वी शाखा से बंगला, उड़िया तथा असमिया; मागधी अपभ्रंश से बिहारी, मैथिली, मगही और भोजपुरी; अर्द्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी; शौरसेनी अपभ्रंश से बुन्देली, कन्नौजी, ब्रजभाषा, बांगरू, हिन्दी; नागर अपभ्रंश से राजस्थानी, मालवी, मेवाड़ी, जयपुरी, मारवाड़ी तथा गुजराती; पालि से सिंहली और मालदीवन; टाक्की या ढाक्की से लहँडी या पश्चिमी पंजाबी; शौरसेनी प्रभावित टाक्की से पूर्वी पंजाबी; ब्राचड अपभ्रंश से सिन्धी भाषा (दरद); पैशाची अपभ्रंश से कश्मीरी भाषा का विकास हुआ है।

भाषाओं के सम्बन्ध में यह भी एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि भाषा की स्थिति विभिन्न युगों में परिवर्तित होती रही है। भावों के संवहन के रूप में जनता का झुकाव जिस ओर रहा, भाषा का प्रवाह उसी रूप में ढलता गया।

यद्यपि पूर्वोक्त सभी क्षेत्रीय भाषाओं के रूप आज हमारे सामने नहीं

हैं; किन्तु भाषावैज्ञानिकों की भाषा विषयक अवधारणाओं तथा मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं के विकास-क्रम को ध्यान में रखकर इन सम्भावनाओं को झुठलाया भी नहीं जा सकता। वास्तविकता भी यही है कि भाषाओं के विकास की जड़ें आज भी लोक-बोलियों में गहराई तक जमी हुई लक्षित होती हैं। कभी-कभी हम यह अनुमान भी नहीं कर सकते हैं कि कतिपय शब्दों को जिन्हें हम केवल वैदिक साहित्य में प्रयुक्त पाते हैं। वे हमारी बोलियों में सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं।

इन प्राकृतों को जब व्याकरण के नियमों में बाँधा गया, तब पुनः जनभाषाओं के प्रवाह को रोका न जा सका, जिससे अपभ्रंश भाषाओं का जन्म हुआ। कालान्तर में अपभ्रंशों को नियमबद्ध करने के प्रयत्न हुए, जिससे आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएं उत्पन्न हुईं, जिनमें हिन्दी, बंगाली, उड़िया, असमियाँ, भोजपुरी, मगही, मैथिली, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी आदि सम्मिलित हैं। निश्चित ही इन भाषाओं से और भी अनेकानेक बोलियों/भाषाओं का विकास होता रहा है। यह सब अनुसंधान का आवश्यक विषय है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषायें सम्पूर्ण जनमानस में व्याप्त रहीं हैं, तथा इन्हीं से आधुनिक भारतीय भाषायें उद्भूत हुई हैं । भाषावैज्ञानिक भी इस सच्चाई को स्वीकार करते हैं। ऐसी महत्त्वपूर्ण एवं महनीय प्राकृत को जीवंत, व्यापक और प्रयोजनीय बनाने हेतु हम सभी को मिलजुल कर प्रयास करना अति आवश्यक है।

इसीलिए हम सबका यह परम कर्तव्य है कि पूरे देश में जनभाषा के रूप में लोकप्रिय रही इस प्राकृत भाषा के व्यापक प्रचार -प्रसार हेतु बहुविध प्रयास करने चाहिये, ताकि हमारी भावी में पीढियां इसमें निहित नैतिक जीवन मूल्यों, इसके इतिहास, परम्पराओं में पारंगत हो, आत्मविश्वासी और सक्षम बन सके। क्योंकि यदि हम इन प्राचीन बहुमूल्य भाषाओं और विद्याओं को समग्रता के साथ पढ़ने की योग्यता और अभ्यास खो देंगे तो मानव जीवन के लिये अनिवार्य और आधारभूत चीजों को भी खो देंगे।

प्राकृत को मात्र किसी धर्म, सम्प्रदाय, समाज और साहित्य से ही जोड़कर नहीं देखना चाहिये। इनसे अलग होकर एक समग्र भारतीय, नैतिक, सांस्कृतिक और जीवनमूल्यों से जोड़कर देखना चाहिए क्योंकि इसकी उन्नति की ओर सभी का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। इसे सभी चिन्तनशील भारतीयों की चिन्ता बनाना चाहिए और गुणवत्ता की ओर ध्यान देना चाहिए। यहाँ जिस प्राकृत भाषा को हम जीवंत बनाने की बात कर रहे हैं, उसके वैशिष्ट्य, महत्त्व और व्यापकता को जानना आवश्यक है। इसीलिए यहाँ यह चिंतन प्रस्तुत किया गया।

शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी में बिजली आपूर्ति

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जी जैन के ३ अक्टूबर २०२४ से ५ अक्टूबर २०२४ तक त्रिदिवसीय प्रवास कार्यक्रम के अन्तर्गत तीर्थक्षेत्र कमेटी के मधुबन स्थित कार्यालय एवं शाश्वत ट्रस्ट के कार्यालयों का दौरा कर व वहां की सामान्य व्यवस्थाओं को देखा समझा।

पिछले बहुत समय से यह पाया जा रहा है कि श्री सम्मेदशिखरजी के मधुबन क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति बहुत ही कम है, जिसके कारण वहां पर जनरेटर के लिए डीजल का खर्चा बहुत अधिक आ रहा है तथा पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इस हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन जी तथा उत्तर प्रदेश– उत्तराखण्ड अंचल के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जैन जी विद्युत वितरण निगम लिमिटेड झारखण्ड के मुख्यालय रांची भी गए। जहां विद्युत

वितरण निगम के मुख्य प्रबंध निदेशक श्री के.के. वर्मा जी से क्षेत्र पर बिजली की व्यवस्था की विस्तृत चर्चा कर लिखित ज्ञापन भी दिया। श्री के.के. वर्मा जी ने बताया कि श्री सम्मेदशिखर जी के मधुबन क्षेत्र पर बिजली व्यवस्था की जानकारी उन्हें भी है और उसे हल करने के लिए वह स्वयं भीप्रयासरत है। उन्होनें ११,००० किलोवाट बिजली की पृथक लाईन खिचवानें का इन्तजाम इस वर्ष २०२४ अक्टूबर के अन्त तक या नवम्बर २०२४ के प्रारम्भ तक कार्य पूर्ण होने का आश्वासन भी दिया।

उम्मीद है कि जैन समाज के शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी मधुबन क्षेत्र में बिजली की समस्या का हल हमें शीघ्र ही मिलेगा।

– मीनू जैन

अंतर्मन का दीप जलाने की शिक्षा देता है भगवान महावीर का निर्वाण पर्व दीपावली

- ध्रुव कुमार जैन

दीपावली निर्वाण पर्व है जैनधर्म के अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर का जिन्होंने इस भारतवर्ष की पावन धरा पर जन्म लेकर एक नये युग का सूत्रपात किया और विश्व में अहिंसा का दीप जलाया, दीपावली दीपमालिकाओं से सुसज्जित एक अद्भुत चमक है उन मणियों की जिसे देवताओं ने भगवान् के निर्वाण के उपरांत जलाया और जिसके अलौकिक प्रकाश ने अज्ञानतम का नाश किया और दीपावली एक पर्व है विश्व बन्धुत्व एवं अनेकता में एकता का जिसे सम्पूर्ण भारतवासी अपने-अपने तरीकों से मनाकर अपने-अपने आराध्य देवों की उपासना करते हुए भी एक दूसरे का सहयोग कर इस पर्व की भव्यता प्रदर्शित करते हैं।

अहिंसा के अग्रदूत भगवान् महावीर का २५५१वाँ निर्वाण पर्व दीपावली ०१ नवंबर २०२४ को पूरे देश में मनाया जा रहा है। अलौकिक एवं आकर्षक दीपों की जगमगाहट के साथ एक सुनहरे और चमकदार दुनिया का आभास करने वाले इस पर्व का जैन धर्म में एक अलग पहचान है और वह है 'मुक्ति - पथ' को आलोकित करने का। 'अपने व्यवहारिक घर के साथ - साथ आत्मिक घर को प्रकाशित करो' इस पर्व का स्पष्ट संदेश है।

जिस समय अधर्म बढ़ रहा था, धर्म के नाम पर असंख्य पशुओं को यज्ञ की बलिवेदी पर होम दिया जाता था, संसार के लोग पुरोहितों, पाखंडी धर्माचार्यों के बताये हुए अधर्म के मार्ग पर चलने के लिए विवश थे तब ऐसे भयंकर समय में जगत के प्राणियों को सत्य मार्ग दर्शाने, दुख से पीड़ित जीवों में अहिंसा का दीप जलाने, विश्व को सहानुभूति का अन्तिम दान देने, सार्वभौमिक परमधर्म अहिंसा का संदेश सुनाने के लिए इस पुनीत पावन भारत वसुन्धरा पर भगवान् महावीर ने चौबीसवें तीर्थंकर के रूप में जन्म धारण किया।

भगवान महावीर ने अपने दिव्य जीवन में अहिंसा, विश्वमैत्री एवम आत्मोद्धार का उत्कृष्ट आदर्श उपस्थित कर ४२ वर्ष की उम्र में ही आत्मा के प्रबल शत्रु घातिया कर्मो को नष्ट कर लोकालोक प्रकाशक केवालज्ञान प्राप्त किया और भव्य जीवों को दिव्य ज्ञान दिया। कार्तिक कृष्ण अमावस्या की पावन तिथि को स्वाति नक्षत्र में प्रातःकाल के समय भगवान महावीर ने मनोहर वन में अनेक सरोवरों के बीच एक शिलापट्ट पर विराजमान होकर ७२ वर्ष की आयु में इस नश्वर शरीर को त्याग कर मोक्ष पद प्राप्त किया। उसी दिन रात्रि को ही इंद्रभूति गणधर को भी केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

भगवान् महावीर के निर्वाण गमन और गौतम गणधर के कैवल्यज्ञान से प्रसन्न होकर देवतागण ने पावापुर वन में रत्नदीप संजोकर ऐसा दीप जलाया कि जिसके प्रकाश से आभास होने लगा कि कहीं यह दूसरा अमरतलोक तो नहीं है। उस समय पूरा का पूरा नभमंडल और पृथ्वीलोक अलौकिक दीपों से जगमगा रहा था। उस समय से आज तक भारतवर्ष की पावन धरा पर भगवान् महावीर के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में दीपावली मनाई जाने लगी।

"एक पवित्र पर्व जिसका उद्देश्य है घर शुद्धि, तन शुद्धि तथा मन शुद्धि तथा जिसकी शिक्षायें है आत्मा के अन्धकार को दूर करो और जो हमें अलौकिक ज्ञान के प्रकाश में विचरण करो " ऐसे पर्व दीपावली को हम भगवान् महावीर की संतान भूल रहे हैं? यह चिन्तन का विषय है। आज हम इस पर्व के मूल उद्देश्य से भटकते जा रहे हैं। जहाँ जैनधर्म के किसी भी पर्व में मौज मस्ती का न होना पाया जाता है वहीं इस पर्व को हम पूरी तरह से मौज मस्ती के लिए ही मनाने का प्रयास करते है, जहाँ जैनधर्म दुर्व्यसनों से दूर रहने की शिक्षा देता है वहीं सबसे बड़े दुर्व्यसन 'जुआ' के साथ हम इस पर्व का शुभारंभ करते हैं, जहाँ हम भगवान् महावीर की 'अहिंसा' की शिक्षा पर-घर पहुँचाने का नारा देते हैं वहीं पटाखे फोड़कर, पटाखे दगाकर, पटाखे जलाकर खुद ही हजारों, लाखों जीवों की हिंसा करते हैं। जहाँ हम मंदिरों में रात्रि में परिक्रमा का त्याग मात्र हिंसा से बचने के लिए करते हैं और यदि आरती करते हैं तो आरती के पश्चात् उस दीपक को मात्र हिंसा से बचने के लिए जालीनुमा ढक्कन से उसे ढक देते हैं, वहीं दीपावली पर रात्रि में हम सैकड़ों दीपक जलाकर क्या करते हैं? सोचो। जबकि हमें अहिंसा पर ही आधारित होना चाहिए। यदि दीप जलाना है तो भगवान् महावीर के निर्वाण के समय जलाओ और मंदिरों को खूब सजाओ। ध्यान रहे दीप 'अहिंसा के पुजारी के लिए ही जले'।

एक तरफ तो हम अहिंसा के अग्रदूत भगवान् महावीर का निर्वाणोत्सव मना रहे हैं तो दूसरी तरफ हिंसा को बढ़ावा देने का कार्य भी कर रहे हैं। भगवान् महावीर को यदि विश्व जानता, मानता और पहचानता है तो उनकी 'अहिंसा धर्म' के लिए। हमें अपनी अहिंसामयी पहचान नहीं छोड़नी चाहिए। भगवान् महावीर ने बताया है कि "इस पवित्र पर्व पर आत्मा की गहराई में उतर कर देखो, एक दीपक वहाँ भी है, उसे प्रकाशित करो, यह दीपक महावीर नाम के जपने से नहीं बल्कि उसमें डूबने से जलेगा, और यदि यह जल गया तो मुक्ति का पथ आसानी से दिख जायेगा।"

आइये दीपावली के इस परम पावन पर्व पर ज्ञान दीप के लौ से विषय-कषायों को जलाकर राख कर दें, कुरीतियों और कुप्रथाओं से दूर रहे और ज्ञान की दीपमालिकाओं से अन्तर्मन को प्रकाशित करें यदि उस प्रकाश में हम खुद को जान लिये, पहचान लिये तो सफल हो गया दीपावली का आना।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव वर्ष मनाने के लिए हो जाइये तैयार आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज के सान्निध्य में शताब्दी समारोह के भव्य उदघाटन के साथ समारोह का होगा उद्घोष

-डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य के रूप में जैन समाज ने जिस सूर्य का प्रकाश प्राप्त किया उसने सम्पूर्ण धरा का अंधकार समाप्त कर एक बार फिर से भगवान महावीर के युग का स्मरण कराया था वह थे श्रमण जगत में महामुनींद्र, चारित्र चक्रवर्ती, आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज। उन्होंने णमोकार महामंत्र का णमो आइरियाणं ये पद आदर्श रूप से भूषित किया है। अपने तप, त्याग और संयम पालन द्वारा मुनिचर्या का आगमोक्त मार्ग बताया। उनका जीवन महान पथ प्रदर्शक के रूप में था। वर्तमान में जो हमारी श्रमण परंपरा विद्यमान है, वे इन्हीं ऋषिराज की कृपा से है।

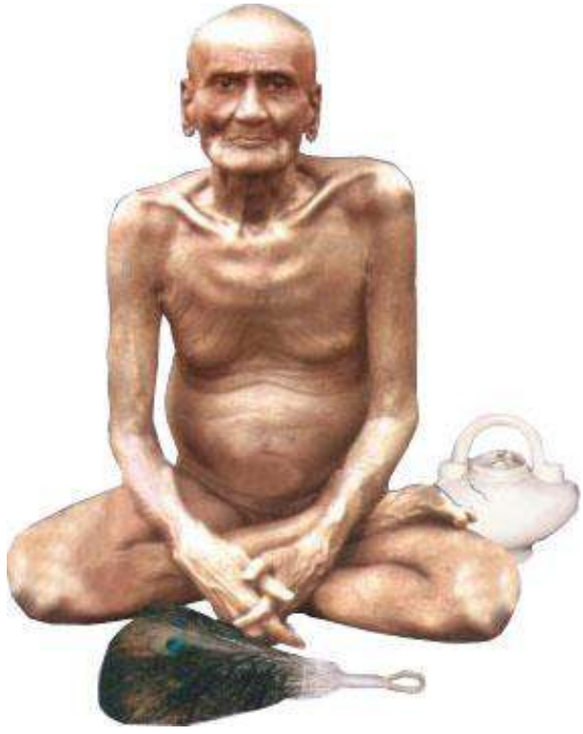

जैन आगम के परिप्रेक्ष्य में समाज को सुधारने हेतु आचार्यश्री द्वारा उठाये गये कदम अत्यंत साहसिक एवं आर्ष परम्परावादी रहे। आचार्यश्री ने जहां जैनधर्म और संस्कृति के वास्तविक पथ को पुनर्स्थापित किया वहीं उन्होंने समाज की कतिपय कुरीतियों पर भी अपना ध्यन आकर्षित कर उनके जड़मूल समापन का सफल प्रयास किया।

अंग्रेजों के शासनकाल में आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज एक ऐसे जैन मुनि हुए जिन्होंने अपने दिगम्बरत्व से जैनधर्म की भी विश्वव्यापी पताका फहरायी और भविष्य के लिए इस धर्म की नींव अत्यंत मजबूत बना दी।

कर्नाटक के भोज में सन 1872 में जन्में बालक सातगौड़ा ने यरनाल में मुनिदीक्षा ग्रहण कर सन 1924 समडौली में आचार्य पद प्राप्त किया था। संपूर्ण देशभर में पद विहार कर उन्होंने बीसवी सदी में दिगम्बरत्व के विस्तार व जैनत्व के उन्नयन के लिए अनेकों कार्य किये। वर्तमान में 1600 से अधिक पिच्छीधारी संत उनका स्मरण कर मोक्षमार्ग पर अग्रसर हैं। उनकी पट्ट परम्परा के पंचम पट्टाधीश आचार्य के रूप में आचार्यश्री वर्धमानसागरजी विगत 1990 से उक्त पद पर शोभायमान हैं।

आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज की प्रेरणा व सान्निध्य में आचार्य श्री शांति सागर जी का मुनि दीक्षा शताब्दी (वर्ष 2019-20) महोत्सव मुनि दीक्षा स्थली यरनाल (कर्नाटक) में हम सबने हर्षोल्लास पूर्वक मनाया था। ऐसे महान आचार्य का आचार्य पद का शताब्दी वर्ष मनाने का भी शुभ प्रसंग हमारे बीच आ गया है। जिसका उदघाटन (पारसोला) राजस्थान में परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परंपरा के पट्टाचार्य वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में 13 के 15 अक्टूबर 2024 तक त्रिदिवसीय आयोजन के माध्यम से होने जा रहा है।

शताब्दी समारोह की सर्वप्रथम अपने मुखार बिंद से घोषणा विजयनगर (अजमेर) में आचार्यश्री ने की थी। इस संबंध में विजयनगर में आचार्यश्री से चर्चा करने का अवसर भी प्राप्त हुआ था।

आचार्य पद प्रतिष्ठापन के 100वें वर्ष को आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी महोत्सव के रूप में 2024-25 में भव्य विशाल स्तर पर वैचारिक आयामों के साथ संस्कृति संवर्धन, सामाजिक सरोकार के बहुउद्देशीय पंचसूत्री कार्यक्रमों के साथ मनाया जाएगा। महोत्सव के आयोजन के लिए विस्तृत रूपरेखा व कमेटी गठन के लिए परम्परा के पट्टाधीश राष्ट्रगौरव, वात्सल्यवारिधि आचार्य 108 श्री वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में एक कमेटी का गठन भी हो चुका है।

आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज का कहना है कि न -'उनका गुणगान करने उनके कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव संस्कृति संरक्षण व सामाजिक सरोकार का माध्यम बनेगा'।

अपने पूर्वजों के उपकारों को याद रखने वाले श्रावक अपने कर्तव्यों का सही पालन करते हैं। जिनकी कृपा प्रसाद से समाज, संस्कृति, श्रमण संस्कृति धर्म और वंश का संरक्षण और पोषण होता है उनके गुणों का गुणगान करना हमारा दायित्व है।

जैन समाज एवं धर्म के वर्तमान इतिहास पर यदि दृष्टिपात करें तो बीसवी सदी के प्रथम आचार्य के रूप में जन्में चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के समाज पर अनंत उपकार हैं।

हम सभी का परम सौभाग्य है कि ऐसे चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागरजी का आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव संपूर्ण देश में मनाने का अवसर 2024-25 में प्राप्त होने जा रहा है, हम सभी अभी से इसके लिए संकल्पित हों।

आईए पूरी श्रद्धा और समर्पण के साथ इस शताब्दी वर्ष को प्राण-प्रण से मनाने के लिए तैयार हो जाएं।

उनको मिटा सके, यह जमाने में दम नहीं।
उनसे जमाना खुद है, जमाने से वह नहीं।।

जन्मदिवस 10 अक्टूबर पर विशेष

आत्मावलोकन तथा तप साधना के प्रतीक संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

- डॉ. नरेन्द्र जैन भारती सनावद

वर्तमान युग में श्रमण धर्म की मुनि परंपरा के अनुरूप ज्ञान, ध्यान और संयम से जिन्होंने संपूर्ण जैन समाज को लगभग 55 वर्षों तक सर्वाधिक प्रभावित किया है,उनमें परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज का स्थान सर्वोपरि रहा है। आपकी त्यागमयी वृत्ति और तप- साधना रत्नत्रय के अनुरूप रही है। इसीलिए उनके 79 वें जन्म दिवस पर हम श्रद्धा और भक्ति के साथ नमोस्तु निवेदन कर उन्हें स्मरण करते हैं।

कर्नाटक प्रांत के बेलगांव जिले के ग्राम सदलगा में 10 अक्टूबर 1946 को अपने जन्म से पवित्र करने वाले विद्याधर ने श्रमण दीक्षा धारण करके सदलगा के संत के रूप में अपार ख्याति अर्जित कर दुनिया में अपना नाम रोशन कर इस युक्ति को चरितार्थ किया कि आदमी जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। ऐसे हैं सदलगा के संत, संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज। आपके दीक्षा गुरु आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज ने उन्हें बालक अवस्था में मुनिचर्या के जो संस्कार और भगवान जिनेंद्र देव की वाणी का सम्यक ज्ञान दिया, उसका उन्होंने अपनी तप साधना में सम्यक उपयोग किया। आचार्य श्री विद्यासागर जी भगवान जिनेंद्र देव के इस कथन में विश्वास रखते थे कि व्यक्ति को पहले आत्महित करना चाहिए और यदि समय मिले तो पर हित पर ध्यान देना चाहिए। आपने मुनि अवस्था में आकर भी ज्ञानार्जन के लक्ष्य को नहीं छोड़ा। स्वयं तो घंटों स्वाध्याय करते ही थे अपने द्वारा दीक्षित तथा त्याग मार्ग पर अग्रसर मुनियों, साध्वियों, ऐलक, क्षुल्लक तथा ब्रह्मचारिणी दीदियों और ब्रह्मचारी भाइयों को भी हमेशा ज्ञान बढ़ाने में संलग्न किए रहते थे। आपके सम्यकज्ञान से अनेक चेतन ज्ञानदीप प्रज्वलित हुए, जिससे संपूर्ण देश में सम्यक ज्ञान का प्रकाश आज भी फैल रहा है। शरीर के प्रति निर्ममत्व भाव और इंद्रियों पर नियंत्रण के आत्म बल का पता आपकी दैनिकचर्या में दृष्टिगोचर होता था। कई वर्षों से रसों का त्याग कर नीरस आहार लेकर आपने दुनिया को बताया कि जीवन मे सिर्फ स्वादिष्ट भोजन के द्वारा ही नहीं, नीरस भोजन ग्रहण करके भी इच्छानुसार लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। इसका जीवन्त उदाहरण संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज रहे। विद्या मंजरी में उपाध्याय निर्मल सागर जी महाराज लिखते हैं

वीतरागमय नग्न दिगंबर, जग में मूरत न्यारी है,
विद्यासागर मूरत तेरी,सबको लगती अति प्यारी है।
दया धर्म निज रूप बताने मुनि बनकर आचार्य बने,
हाथ जोड़कर शीश झुकाते हम भी तुमसे आर्य बनें।।

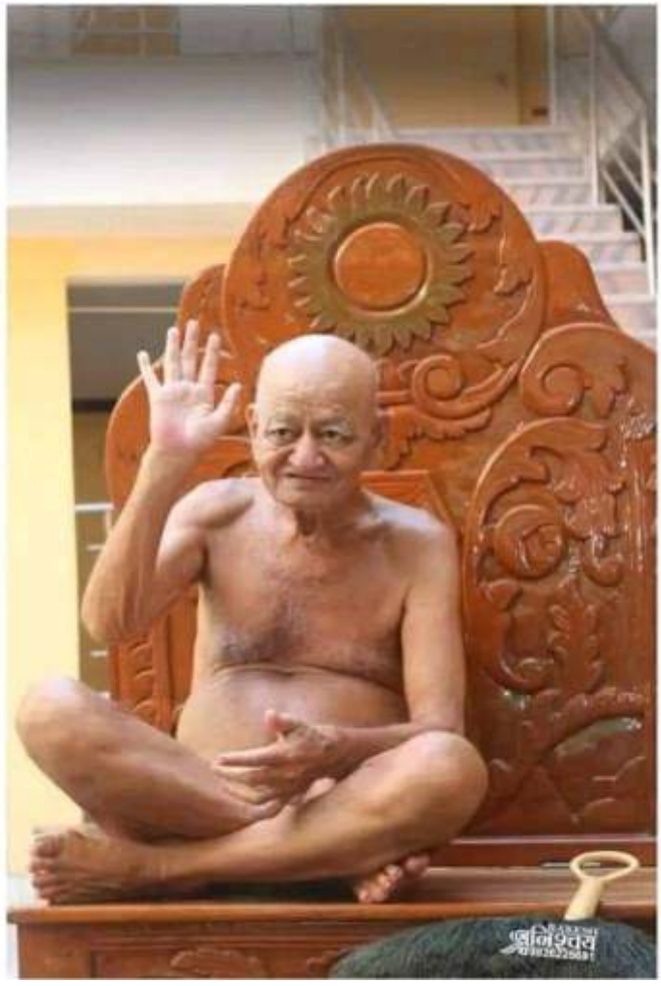

आपकी मुनि अवस्था की जीवनचर्या त्याग प्रधान रही। जिसमें आचार का ही बोलबाला रहा। आप जीवन भर अहिंसा और सत्य के रास्ते पर चले। आपकी मन मोहिनी मुस्कान की एक झलक पाने को सभी व्याकुल और बेचैन रहते थे क्योंकि आपके मुखमंडल की आभा में सम्यक तप का तेज दिखाई देता था।आपके दर्शन को पाकर दर्शनार्थी अपने जीवन को धन्य मानते थे । आत्मरस में लीन रहते हुए सतत आत्म अवलोकन करते हुए धर्म ध्यान की मौन साधना में रहते हुए भी तन से मोह त्याग कर आप अध्यात्म रस का पान करते थे। मंत्रदृष्टा के रूप में जगत विख्यात थे।आपने मानव जगत को अपनी चर्या के माध्यम से यह संदेश दिया कि एक समर्पित साधक की साधना तभी सफल होती है वह जब राग, द्वेष और मोह का त्याग कर संसार के प्रपंचों से दूर रहकर साधना करे और लक्ष्य प्राप्ति उसके चिंतन में हो। आप अपने नाम के अनुरूप विद्या के सागर ही थे क्योंकि आपका ज्ञान संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय से रहित था। आप सागर के समान गंभीर थे परंतु चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती थी। आपका हर कार्य जिनवाणी तथा मूलाचार के अनुरुप होता था। किसी रचनाकार ने आपके संबंध में यथार्थ लिखा है -

विद्यासागर विश्ववाहि सुनदी, स्वाध्याय संवाहितः।

सम्यग्ज्ञान सुनिर्मला,धवलिता ज्ञानाद्रिजा राजितः।।
मूलाचार निजानुभूति सुतटा, स्यादवाद भंगापरा।
तं वन्दे मुनिसंघ रत्ननिकरा, निर्ग्रन्थ नीरावरा।।

आपके जीवन दर्शन में मूलाचार का संपूर्ण आचार समाहित था इसलिए वर्तमान युग में उनके द्वारा दीक्षित साधुगण शिथिलाचार से दूर रहकर आगम में वर्णित नियमानुसार जीवनचर्या रखकर आत्म साधना में सतत लीन रहकर धर्म प्रचार करते हैं तथा कुरीतियों पर कड़ा प्रहार करते हैं। मूकमाटी,जैन गीता,समंतभद्र की भद्रता, नर्मदा का नरम कंकर, गुणोदय, डूबो मत लगाओ डुबकी जैसी रचना कर आपने साहित्य लेखन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है। श्री भारत भूषण जैन मैनपुरी आपके संबंध में लिखते हैं कि

जिनकी वाणी का विराग से रहता केवल नाता,
जाने कितने मुक्ति प्रदाता ग्रंथों के निर्माता।
रत्नत्रय पर चले चलावें गुरु का यही कथन है,
विद्यासागर जी को युग का सौ - सौ बार नमन है।

परम पूज्य समाधिस्थ आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज ने एक बार कहा था कि चतुर्थ काल के सदृश्य मुनि वर्तमान में देखना है तो आचार्य श्री विद्यासागर जी को देखें। क्योंकि भौतिक युग की अंधी दौड़ में भी आप श्रमण आचार्य परंपरा का साक्षात् दिग्दर्शन करा रहे हैं। आपने संपूर्ण देश में परिभ्रमण कर प्राचीन तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन तथा विकास में अपूर्व योगदान दिया है। कुंडलपुर, नेमावर, रामटेक, डोंगरगढ़, बीना बारहा, जबलपुर की पिशनहारी मढ़िया जी, अमरकंटक जैसे अनेक तीर्थ आपके चातुर्मास के समय में ही उन्नति तथा विकास कर सके। जहां-जहां आपके कदम पढ़ते थे वहां जंगल में भी मंगल हो जाता था। जिसका वर्णन किसी कवि ने इस तरह किया है -

चौथा काल स्वयं आ जाता, जहां आपका पग रुक जाता।
जंगल में मंगल हो जाता, जहां आपका मन रुक जाता।।

आज हमारे मार्गदर्शक, धर्म मार्ग का सम्यक दिशा निर्देशन देने वाले संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज हम सभी के बीच नहीं है, लेकिन उनका बताया गया श्रेष्ठ रत्नत्रय का मार्ग हम सभी को सत्पथ पर आगे बढ़ाता रहेगा। इसी भावना के साथ उनके पावन जन्मदिवस पर उनके श्री चरणों में नमोस्तु करते हुए, उनके बताये मार्ग पर चलने को संकल्पित रहते हुए, सभी मुनि धर्म के प्रति समर्पित रहें यही भावना रखता हूँ।

जैन गजट के गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज विनयांजलि विशेषांक का हुआ विमोचन

शताधिक वर्ष प्राचीन जैन गजट के गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज विनयांजलि विशेषांक का विमोचन 22 सितम्बर 2024 को आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के प्रभावक शिष्य परम पूज्य मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज, परम पूज्य मुनि श्री प्रणतसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सआदतगंज लखनऊ में किया गया।

इस मौके पर जैन गजट के सह संपादक डॉ सुनील जैन संचय ललितपुर ने बताया कि जैन गजट 1895 से लगातार समाज और संस्कृति की सेवा में संलग्न है। इस विशेषांक का प्रकाशन मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज की प्रेरणा से किया गया है।

श्री प्रदीप पाटनी लखनऊ ने जैन गजट के आगामी 28 अप्रैल 2025 को आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने की घोषणा की । यह विशेषांक भी मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज की प्रेरणा से प्रकाशित किया जाएगा।

विशेषांक का विमोचन डॉ श्रेयांस कुमार जैन बडौत, डॉ शीतल चंद्र जैन जयपुर, प्रोफेसर फूलचंद्र प्रेमी वाराणसी, डॉ नरेंद्र जैन टीकमगढ़, प्रोफेसर विजय कुमार जैन लखनऊ,पंडित विनोद कुमार जैन रजवांस, डॉ सुरेंद्र जैन भारती बुरहानपुर,डॉ सुनील जैन संचय ललितपुर, डॉ सनत जैन जयपुर, डॉ ज्योति जैन खतौली, पंडित सुनील जैन सुधाकर सागर, डॉ पंकज जैन इंदौर, डॉ आशीष जैन दमोह, पंडित अनिल जैन शास्त्री सागर, पंडित अखिलेश शास्त्री रामगडा , वर्षायोग समिति के अध्यक्ष हंसराज जैन, कार्याध्यक्ष जागेश जैन, संयोजक संजीव जैन, सआदतगंज जैन मंदिर के अध्यक्ष वीरेंद्र गंगवाल, विनय जैन, महासभा से प्रदीप पाटनी, कमल रावका आदि ने किया। एक प्रति सर्वप्रथम मुनिश्री को भेंट की गई इसके बाद सभी विद्वानों को भी प्रतियां भेंट की गई।

दिगंबर जैनधर्म सिद्ध- तीर्थराज सम्मेदशिखर प्रमाण ऐतिहासिक

- निर्मलकुमार पाटोदी

भारत के धर्मों में दिगम्बर जैन धर्म सबसे प्राचीन है। दिगंबर जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरों की परंपरा ऋषभनाथ से प्रारंभ होकर महावीर तक चली है। पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं, जिन मूर्ति स्थापना का इतिहास भी अति प्राचीन है। शास्त्र भण्डार, मूर्ति लेखों, शिलालेखों, प्रशस्तियों, पट्टावलियों, हस्तलिखित पाण्डुलिपियों, सिद्धांत ग्रंथों, प्राचीन मंदिर आदि जैनधर्म के साधार ऐतिहासिक प्रमाण स्वरूप विद्यमान है।

जिस स्थान से तपस्वी योगसाधकों ने निर्वाण को प्राप्त किया अर्थात् जीवन-मरण से मुक्त हुए, उस स्थान को सौधर्म इन्द्र द्वारा अपने वज्रदण्ड से चिह्नित करने का वृतांत आगम ग्रंथों में मिलता है। समाज के श्रद्धालुओं के द्वारा उस स्थान पर चरण-चिह्न स्थापित किये गये। वह चरण-चिह्न स्थल समाज के श्रद्धालुओं का धर्मतीर्थ हो गया। भवसागर से पार उतरने का मार्ग बताने वाले इन सिद्ध धर्म तीर्थों की वंदना, पूजा और दर्शन के लिए यात्रा परंपरा से सतत् जारी है। तीर्थंकरों के निर्वाण क्षेत्रों में सबसे बड़ा झारखण्ड राज्य के गिरिडीह जिले में स्थित मधुबन स्थित महातीर्थ सम्मेदशिखर जी (पारसनाथ पर्वत) है। चौबीस में से बीस तीर्थंकर भगवंतों ने पर्वतराज के विभिन्न शिखरों से निर्वाण पद पाया है। भगवान महावीर के प्रथम गणधर गौतम स्वामी को भी इसी सिद्धक्षेत्र से मोक्ष पद मिला है। उनके चरण चिह्न सम्मेदशिखर पर्वत पर स्थित हैं। इन प्रकार 21 दिगंबर आम्नाय के चरण चिह्न सम्मेदशिखर पहाड़ पर स्थित हैं। भगवान आदिनाथ, वासुपूज्य, नेमिनाथ और महावीर स्वामी को अन्य क्षेत्रों से मोक्ष पद मिला है।

दिगंबर जैनियों में तीर्थयात्रा के लिये चतुर्विध संघ निकालने की परंपरा बहुत पुरानी है। सैकड़ों वर्ष पूर्व जब आवागमन के साधन और सुविधाएं बहुत कम थी तब इह लौकिक व पर लौकिक जीवन को मंगलमय बनाने और कर्म निर्जरा के लिये दिगंबर जैन यात्री और श्रद्धालुओं की श्री सम्मेदशिखर जी तीर्थराज की तथा गिरनार जी की यात्रा संघ निकाले गये थे।

सम्मेदशिखर तीर्थराज की महत्ता:-

बीसों सिद्ध भूमि जा ऊपर शिखर सम्मेद महागिरी भूपर।
भाव सहित बंदे जो कोई ताहि नरक पशु गति नहीं होई।।
श्री सम्मेद शिखर सदा पूजों-मन-वच-काय।
हरत चतुर्गति दु:ख को, मन वांछित फल पाय।।
पं. द्यानतराय जी के अनुसार:
3. एक बार वंदे जो कोई, ता ही नरक पशु गति नही होई।

एक बार जो सम्मेदशिखर तीर्थराज की वंदना कर लेता है, वह प्रबल प्रभाव से अधिक से अधिक 49 भवों में मुक्ति द्वार का अधिकारी हो जाता है। भूतल से वंदना पथ, तीर्थ सम्मेदशिखर जी 38 वर्ग किलो मीटर अर्थात् 16,000 एकड़ में फैला हुआ है। इसकी चढ़ाई 9 किलो मीटर, समतल चरण-चिह्न शिखर वंदना क्षेत्र 9 किलो मीटर तथा 9 किलो मीटर उतार का क्षेत्र है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 5,200 फीट है। पर्वत की परिक्रमा 30 किलो मीटर लंबी है।

सैकड़ों वर्ष पहले सम्मेदशिखर तीर्थ की यात्राओं का प्रमाणिक वृतांत:-

वीतराग उर्जा की अवर्णनीय पावन धरा तीर्थों का पहला महा तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी का आठ सौ साल पहले संवत 1384 में आत्म कल्याण के लिए चाकसू राजस्थान से संघपति एवं उसके परिवार ने वंदना की थी। प्रसिद्ध भट्टारक प्रभाचंद्र का पट्टाभिषेक आत्मशोधन इस पावन धरा पर

संवत 1571 फाल्गुन सुदी दूज के शुभ दिन हुआ था। ये रणथम्भोर के निवासी वैद्यराजा वींझराज के पुत्र थे।

संवत् 1658 के पूर्व आमेर राजस्थान के महाराजा मानसिंह के प्रधान अमात्य साह नानू गोधा ने शिखरशिखर पर दिगंबर जैन मंदिर बनवाये एवं तीर्थंकरों के चरण स्थापित किये और कई बार वंदनाएं की। इस तीर्थ की एक बार यात्रा ही अनेक भवों को सुधारने वाली है।

भट्टारक का पट्टाभिषेक सम्मेदशिखर जी में हुआ था। वे संवत् 1622 से 40 साल तक पट्टास्थ रहे थे।

संवत् 1632 में सम्मेदशिखर जी पर फिर से प्रतिष्ठा करवा कर महान पुण्य का अर्जन किया था। इस समय सुरेन्द्र कीर्ति भट्टारक की गादी पर विराजमान थे।

संवत् 1719 फाल्गुन सुदी 9 को श्री मूलसंघ के भट्टारक सुरेन्द्र कीर्ति की आम्नाय के गृद्धवाल (गिरधर वाल) गोत्रीय श्रावक सं. नरसिंहदास एवं सं. सुखानंद ने सम्मेदशिखर पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई थी। इसी समय प्रतिंष्ठापित हींकार यंत्र जयपुर के खिन्दूकों के मंदिर में विराजमान हैं। इसी संघी नरसिंहदास ने फिर सम्मेदशिखर पर संवत 1732 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई जिसमें घासीराम ने दसलक्षण यंत्र की प्रतिष्ठा कराई थी। जो जयपुर के सिरमोरियों के मंदिर में विराजमान है।

दीवान रायचंद जी जहां गूढ़ नीतिज्ञ, वीर, योद्धा और कुशल प्रशासक थे वहां वे बड़े धर्मात्मा भी थे। इनने संवत् 1861 में विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराई। विशाल यात्रा संघ चलाकर संघी पद सार्थक किया।...इनका सम्मेद शिखर यात्रा का विवरण अत्यधिक रोचक एवं इतिहास के कितने ही अचर्चित पृष्ठ खोलने वाला है। यात्रा संघ में पांच हजार स्त्री-पुरुष इनके साथ में थे। एक कवि के शब्दों को देखिये:-

अधिक च्यारसौ रथ अर भैला, अश्व च्यारसौ तिनकी गेल।
सुतर दोयसौ तिन परि भार, नर नारी गिनि पांच हजार।।

सवत् 1863 के माघ वदी सप्तमी को जयपुर के दीवान रायचन्द छाबड़ा अपने विशाल संघ के साथ सम्मेदशिखर जी की प्रथम यात्रा की थी। पूरे संघ ने भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के सानिध्य में माघ वदी 7 को शिखरजी पर पूजन की थी। भट्टारक सुरेन्द्र कीर्ति जी भी वहां थे।

भादवा (राजस्थान)के सुखराम रावका (18 वीं शताब्दी) कवि ने संवत् 1830 को रवाना होकर संवत् 1831 के श्रावण मास के कृष्ण पक्ष में यात्रा करके शिखर जी से वापस लौटे थे।

विक्रम संवत् 1867 कार्तिक कृष्ण पंचमी बुधवार को मैनपुरी (उत्तरप्रदेश) से सम्मेदशिखर यात्रा के लिये एक यात्रा संघ गया था। यहां के दिगंबर जैन धनाढ्य साहु धनसिंह का शुभ भाव श्री सम्मेदशिखर जी की यात्रा संघ सहित कराने का हुआ था। कहते हैं इस यात्रा संघ में करीब 252 बैलगाड़ियां और 1222 यात्रीगण थे। यात्रा का वृतांत सम्मेदशिखर की यात्रा का समाचार नामक हस्त लिखित पुस्तिका में है। यात्रा संघ रास्ते की यात्रा करते हुए माघ वदी तीज को पालगंज पहुंचा था। माघ वदी 5 को संघ मधुबन में ठहरा था। बसंत पंचमी को संघ ने श्री सम्मेदशिखर पर्वत की वंदना की थी। माघ सुदी 15 को मधुबन से वापसी के लिये संघ ने प्रस्थान किया था। बैसाख बदी 12-13 को संघ वापस मैनपुरी पहुंचा।

शत्रुंजय :

यह भी श्वेताम्बर समाज का प्रसिद्ध तीर्थ है। जो भक्ति एवं श्रृध्दा दिगम्बर समाज में सम्मेद शिखर जी के प्रति है वही श्रद्धा श्वेताम्बर समाज शत्रुंजय तीर्थ के प्रति है। पहाड़ पर दो प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है। एक छोटे मंदिर पर श्वेताम्बर समाज ने अनधिकृत कब्जा कर लिया। दूसरा बड़ा मंदिर कोषाधीश भैया साह बड़जात्या ने बनवाया था जिसकी संवत् 1112 में आचार्य भावचंद जी द्वारा प्रतिष्ठा कराई गयी थी। प्रतिष्ठाकारक स्वयं भैसा साह थे।

ऐसे ही दिगम्बर जैन तीर्थयात्रा के लिए संघों का गिरनार यात्रा का वृतांत मौजूद है।

सद्भावना पारमार्थिक न्यास, इंदौर

तारा बाबू का सम्मान पूरे झारखंड के जैन मंदिरों के पदाधिकारीयों द्वारा विशेष सम्मान दिया गया

ज्ञानमती माताजी की कृतियाँ सभी निराली हैं, वो तो तीर्थ बनाती हैं, खुद तीरथ सी प्यारी हैं।।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जो कि वर्तमान में जैन जगत में एक सूर्य के समान गगन में दैदीप्यमान हैं। पूज्य माताजी ने चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परम्परा के प्रथम पट्टाचार्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से राजस्थान के माधोराजपुरा (जयपुर) से दीक्षा प्राप्त कर आर्यिका ज्ञानमती को प्राप्त किया एवं नाम के अनुसार सारे विश्व में एक विराट साहित्य की श्रृंखला का सृजन किया, जो कि भूतो न भविष्यति। ऐसी ज्ञानमती माताजी जिन्होंने अपनी आचार्य परम्परा के सभी आचार्यों का दर्शन किया, जो कि बहुत बड़ी बात है। लगभग आज वर्तमान में 600 साधु-साध्वियाँ विराजमान हैं, उन सबमें सबसे प्राचीन दीक्षित पूज्य ज्ञानमती माताजी हैं, ऐसी माताजी के चरणों में हम सभी शत-शत वंदन करते हैं।

आज सारे देश में पूर्णता के नाम पर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का नाम लिया जाता है, जिन्होंने एक नहीं, दो नहीं अनेक ग्रंथों का सृजन अपनी लेखनी के द्वारा करके समाज को एक बड़ा उपहार दिया है। पूज्य माताजी

की प्रेरणा से तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं विकास किया गया है। आइए हम जानें उनके बारे में-

जिनके उर से कल कल बहती गंगा की निर्मल धारा।
त्याग और शुभ ज्ञानमणि से जिनने निज को श्रृँगारा।।
वचनों के मोती बिखरातीं युग की पहली बालसती।
मेरा शत वंदन स्वीकारो, गणिनी माता ज्ञानमती।।

जन्म, वैराग्य और दीक्षा-22 अक्टूबर सन् 1934, शरदपूर्णिमा के दिन टिकैतनगर ग्राम (जि. बाराबंकी, उ.प्र.) के श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी के दांपत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में "मैना" का जन्म परिवार में नवीन खुशियाँ लेकर आया था। माँ को दहेज में प्राप्त 'पद्मनंदिपंचविंशतिका' ग्रन्थ के नियमित स्वाध्याय एवं पूर्वजन्म से प्राप्त दृढ़ वैराग्य संस्कारों के बल पर मात्र 8 वर्ष की अल्प आयु में ही शरद पूर्णिमा के दिन मैना ने आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से सन् 1952 में आजन्म ब्रह्मचर्यव्रतरूप सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग के नियमों को धारण कर लिया। उसी दिन से इस कन्या के जीवन में 24 घंटे में एक बार भोजन करने के नियम का भी प्रारंभीकरण हो गया।

नारी जीवन की चरमोत्कर्ष अवस्था आर्यिका दीक्षा की कामना को अपनी हर साँस में संजोये ब्र. मैना सन् 1953 में आचार्य श्री देशभूषण जी से ही चैत्र कृष्णा एकम्को श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र में 'क्षुल्लिका वीरमती' के रूप में दीक्षित हो गईं। सन् 1955 में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की समाधि के समय कुंथलगिरी पर एक माह तक प्राप्त उनके सान्निध्य एवं आज्ञा द्वारा 'क्षुल्लिका वीरमती' ने आचार्य श्री के प्रथम पट्टाचार्य शिष्य-वीरसागर जी महाराज से सन् 1956 में 'वैशाख कृष्णा दूज'' को माधोराजपुरा (जयपुर-राज.) में आर्यिका दीक्षा धारण करके "आर्यिका ज्ञानमती'' नाम प्राप्त किया।

विराट साहित्य का सृजन-भगवान महावीर के पश्चात्2600 वर्ष के इतिहास में किसी भी साध्वी ने इतने विपुल साहित्य का सृजन नहीं किया। लेकिन दिव्यशक्ति से ओतप्रोत गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जिन्हें माँ सरस्वती का वरदान प्राप्त है, उन्होंने एक नहीं, दो नहीं लगभग विभिन्न विधाओं में लगभग 500 ग्रंथों का लेखन करके समाज को दे दिया। लेखनी आज भी बंद नहीं है। निरंतर लेखन का कार्य प्रारंभ है। पूज्य माताजी के द्वारा समयसार, नियमसार इत्यादि की हिन्दी-संस्कृत टीकाएँ, जैनभारती, ज्ञानामृत, कातंत्र व्याकरण, त्रिलोक भास्कर, प्रवचन निर्देशिका इत्यादि स्वाध्याय ग्रंथ, प्रतिज्ञा, संस्कार, भक्ति, आदिब्रह्मा, आटे का मुर्गा, जीवनदान इत्यादि जैन उपन्यास,

द्रव्यसंग्रह- रत्नकरण्डश्रावकाचार इत्यादि के हिन्दी पद्यानुवाद व अर्थ, बाल विकास, बालभारती, नारी आलोक आदि का अध्ययन किसी को भी वर्तमान में उपलब्ध जैन वाग्डमय की विविध विद्याओं का विस्तृत ज्ञान कराने में सक्षम है।

धन्य हैं ऐसी महान प्रतिभावान्सरस्वती माता!

दो बार डी.लिट्. की उपाधि से अलंकृत-किसी महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि में पारम्परिक डिग्रियों को प्राप्त किये बिना मात्र स्वयं के धार्मिक अध्ययन के बल पर विदुषी माताजी ने अध्ययन, अध्यापन, साहित्य निर्माण की जिन ऊँचाइयों को स्पर्श किया, उस अगाध विद्वत्ता के सम्मान हेतु डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद द्वारा 5 फरवरी 1995 को डी.लिट्. की मानद् उपाधि से पूज्य माताजी को सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया गया तथा दिगम्बर जैन साधु-साध्वी परम्परा में पूज्य माताजी यह उपाधि प्राप्त करने वाली प्रथम व्यक्तित्व बन गई। पुनः इसके उपरांत 8 अप्रैल 2021 को पूज्य माताजी के 57वें आर्यिका दीक्षा दिवस के अवसर पर तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में विश्वविद्यालय का प्रथम विशेष दीक्षांत समारोह आयोजित करके

विश्वविद्यालय द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई। इसी प्रकार से समय-समय पर विभिन्न आचार्यों एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा पूज्य माताजी को न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न आर्थिकाशिरोमणि, गणिनीप्रमुख, वात्सल्यमूर्ति, तीर्थोद्धारिका, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, राष्ट्रगौरव, वाग्देवी इत्यादि अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया है, किन्तु पूज्य माताजी इन सभी उपाधियों से निस्पृह होकर अपनी आत्मसाधना को प्रमुखता देते हुए निर्दोष आर्थिका चर्या में निमग्न रहने का ही अपना मुख्य लक्ष्य रखती हैं। पूज्य माताजी की प्रेरणा से विकसित तीर्थ-पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से विकसित अनेक तीर्थ हैं। जिनमें तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियाँ मुख्य हैं और संतों के विषय में यह कहावत भी कही गई है-

जहाँ पड़े चरण संतों के वह रज चंदन बन जाती है।
कल कल करती कालिन्दी मरुस्थल में बह जाती है।।

सर्वप्रथम चरण में हस्तिनापुर, जो कि दिल्ली के निकट में है। मेरठ जिले में स्थित है। हस्तिनापुर तीर्थ पर जबसे माताजी के चरण पड़े, उसकी काया ही पलट गई एवं अनेक राजनेताओं का आवागमन एवं माताजी जैसी दिव्यशक्ति का आगमन जैसे तीर्थ के लिए वरदान बन गया और दिन दूनी रात चौगुनी तीर्थ प्रगति को प्राप्त होने लग गया। विश्व की अद्वितीय रचना जम्बूद्वीप का निर्माण एवं स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना का निर्माण व अद्वितीय तीनलोक रचना का निर्माण प्रथम बार हस्तिनापुर में हुआ एवं तीर्थंकर शांति-कुंथु-अरहनाथ की 3-3॥ फुट ऊँची प्रतिमा विराजमान की गई एवं अनेक विकास के कार्य यहाँ पर किये गये। प्रयाग तीर्थ जो कि प्राचीनता को प्राप्त है। जैन आगम अनुसार वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभदेव ने सर्वप्रथम यहीं प्रयाग तीर्थ पर जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की थी एवं भगवान ने इसी पुण्य भूमि पर किया। यहीं पर भगवान ऋषभदेव का प्रथम समवसरण भी आया था एवं प्रयाग में भगवान ऋषभदेव की तपस्थली का निर्माण कार्य किया गया, जिसमें मुख्यरूप से कैलाशपर्वत की रचना की गई, जिसमें त्रिकाल चौबीसी विराजमान की गई एवं वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव की ध्यानस्थ प्रतिमा को विराजमान किया गया एवं भगवान ऋषभदेव समवसरण जिनालय का निर्माण किया गया। आज इलाहाबाद के प्रमुख पर्यटन क्षेत्रों में इसकी गिनती होती है एवं इलाहाबाद एवं सारे देश से यात्रियों का तांता लगा रहता है।

नंद्यावर्त महल तीर्थ, कुण्डलपुर जो कि जैनधर्म के 24वें तीर्थंकर एवं वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर की जन्मभूमि है। पूज्य माताजी की दृष्टि इस ओर गई कि यहाँ पर १00 वर्ष पुराना प्राचीन मंदिर तीर्थ पर स्थित है, लेकिन तीर्थ का विकास शून्य है। माताजी ने तीर्थ पर चरण रखे एवं उस दिन से इस तीर्थ की कीर्ति सारे देश के अंदर दिग्दिगंत हो गई। आज आने वाले प्रत्येक यात्री को कुण्डलपुर स्वर्ग की तरह प्रतीत होता है। कुण्डलपुर तीर्थ पर नंद्यावर्त महल बनाकर भगवान के जीवन से संबंधित विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है एवं बीचोंबीच भगवान महावीर का विशाल जिनालय निर्मित किया गया है, जिसमें भगवान की शवेतवर्णी अवगाहना प्रमाण प्रतिमा को विराजमान किया गया है। वहीं दूसरी ओर त्रिकाल चौबीसी के 72 भगवन्तों का विशाल जिनालय निर्मित किया गया है। गगनचुंबी तीन शिखर से निर्मित यह तीर्थ अपनी छठा पूरे नालंदा जिले में बिखेरे हुए है। यहाँ आने वाला प्रत्येक नागरिक सुखद अनुभूति को लेकर लौटता है। नालंदा ही नहीं अपितु बिहार के प्रमुख पर्यटन को बढ़ावा देता है नंद्यावर्त महल तीर्थ। यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए 40 कमरे एवं सुन्दर भोजनशाला निर्मित है।

तीर्थ विकास के क्रम में अयोध्या में पाँच तीर्थंकर भगवन्तों ने जन्म लिया उन सब जन्मस्थानों पर विशाल जिनालयों का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से करवाया जा चुका है जिसमें मुख्यरूप से भगवान ऋषभदेव, भगवान अजितनाथ, भगवान अभिनंदननाथ, भगवान अनंतनाथ एवं भगवान सुमतिनाथ हैं। इसके अतिरिक्त काकंदी (गोरखपुर) उ.प्र. में भगवान पुष्पदंतनाथ के जन्मस्थान में विशाल मंदिर निर्माण एवं भगवान पुष्पदंतनाथ की विशाल पद्मासन प्रतिमा को विराजमान किया जा चुका है। इसी क्रम में राजस्थान में श्री महावीर जी, माधोराजपुरा में पारिजात वृक्ष एवं गणिनी आर्यिका ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ, जृम्भिका तीर्थ जमुई ग्राम (बिहार) में भगवान महावीर की केवलज्ञानभूमि पर विशाल प्रतिमा का निर्माण खुले स्थान पर किया गया है, जो कि मेनरोड से दर्शन होता है। सनावद (म.प्र.) में णमोकार धाम तीर्थ का निर्माण, पावापुरी, राजगृही, गुणावां जी एवं सम्मेदशिखर तीर्थों पर भगवन्तों की विशाल प्रतिमा से समन्वित विशाल जिनमंदिर का निर्माण किया गया है। विश्व प्रसिद्ध स्थान शिर्डी (महा.) में निर्मित कमल मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की विशाल पद्मासन प्रतिमा विराजमान की गई एवं तीर्थ सुन्दर तीर्थ विकसित किया गया।

विश्व में सबसे अद्भुत 108 फुट भगवान ऋषभदेव मूर्ति निर्माण की प्रेरणा पूज्य माताजी के द्वारा सन् 1996 में प्रदान की गई थी, जो कि अपने आप में एक चुनौती पूर्ण कार्य था। लेकिन पूज्य माताजी की दिव्यशक्ति ने उस कार्य को भी गति प्रदान करते हुए पूर्ण कर दिया। जो कि आज विश्व के पटल पर

स्थापित हो गई है, जिसका महापंचकल्याणक दिनांक 1 से 7 फरवरी 2006 तक व महामस्तकाभिषेक वृहद्स्तर पर सम्पन्न हो चुका है जिस महापंचकल्याणक में 25 दिगम्बर जैन संतों ने अपनी उपस्थिति एवं सान्निध्य प्रदान किया एवं लाखों लोगों ने सम्मिलित होकर अपने आपको धन्य किया। इसी क्रम में 6 मार्च 2006 को दिगम्बर जैन समाज की सबसे ऊँची प्रतिमा गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कर ली है। इसका सर्टिफिकेट समिति 6 मार्च को लंदन के ऑफिस से आकर कार्यकर्ताओं ने प्रदान किया। इसी उपलक्ष्य में संस्कृति युवा संस्थान के तत्त्वावधान में ब्रिटिश पार्लियामेंट लंदन द्वारा 2 जुलाई को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी को भारत गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। यह जैन समाज के लिए अत्यन्त ही गौरव की बात है।

इसी क्रम में पूज्य माताजी के चरण राजधानी दिल्ली की ओर चल पड़े, जहाँ पर भगवान ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र चक्रवर्ती भगवान भरत ज्ञानस्थली तीर्थ का निर्माण किया गया, जिस पर भगवान भरत स्वामी की 3 फुट उत्तुंग प्रतिमा विराजमान की गई। जिसका पंचकल्याणक 6 जून से 20 जून 2002 तक हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न किया गया। चक्रवर्ती भगवान भरत के नाम पर ही इस देश का नाम भारत पड़ा। क्योंकि आज वर्तमान में भारत देश के इतिहास में भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत का वर्णन अनेक ग्रंथों में सनातन एवं जैन ग्रंथों में प्राप्त होता है। पूज्य माताजी की प्रेरणा से नई दिल्ली के कनॉट प्लेस स्थित क्षेत्र में इस तीर्थ का निर्माण किया गया है। जो कि एक ऐतिहासिक कार्य है। तीर्थ निर्माण के पश्चात्देश के रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह जी एवं अन्य केन्द्रीय मंत्री पूज्य माताजी के दर्शनों के लिए यहाँ पर पधारे। इस तीर्थ पर विराजमान प्रतिमा सारे देश के लिए सुख-शांति एवं समृद्धि का संदेश प्रचारित एवं प्रसारित कर रही है।

इसी के साथ मांगीतुंगी की विश्व की सबसे बड़ी अखण्ड पाषाण में बनने वाली प्रतिमा का 15 जून से 10 जुलाई 2022 तक 6 वर्षीय प्रथम महामस्तकाभिषेक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्पन्न किया गया, जो कि अपने आप में एक अद्भुत कार्य था, जिसमें देश और विदेश के लोगों ने भाग लेकर महामस्तकाभिषेक की खूब सराहना एवं पुण्योपार्जन किया।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञाममती माताजी का समस्त दिगम्बर जैन समाजो ने बड़े रूप में अभिनंदन समारोह मनाया, जिसमें मुख्य रूप से आजाद मैदान-मुम्बई में, सूरत में नासिक में, लखनऊ में, इंदौर में आदि बड़े-बड़े स्थानों पर पूज्य माताजी का अभिनंदन समारोह मनाया गया। लखनऊ प्रवेश का भव्य नजारा जो देखते ही बनता था, लखनऊ जैन समाज ने 8-0 प्रकार के बैण्ड एवं इतनी पुष्प वृष्टि की कि जिधर माताजी जाती थीं, पुष्प ही पुष्प दिखते थे। यह एक अद्भुत नजारा था। अयोध्या में भगवान सुमतिनाथ का पंचकल्याणक आदि अनेक कार्यक्रम पूज्य माताजी की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न किये गये, जिसमें पूज्य ज्ञानमती माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर में ऐतिहासिक चातुर्मास का जिक्र न किया जाये, तो यह यात्रा अधूरी रह जायेगी, ऐसी विशाल व्यक्तित्व के धनी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी।

तव चरणों में झुके हैं सारे-इसी क्रम में पूज्य माताजी के पास प्रारंभ से ही अनेक राजनेताओं का आना-जाना रहा है, जिसमें मुख्यरूप से राष्ट्रपति श्री रामनाथ जी कोविन्द, ए.पी. अब्दुल कलाम, श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील एवं डॉ. शंकर दयाल शर्मा, प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्री राजीव गांधी, श्री नरसिम्हा राव, श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं अनेक प्रदेशों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं अन्य नेताओं ने पूज्य माताजी की विशेष चर्या एवं अद्भुत कार्यकलापों को देखकर प्रभावित हुए एवं पूज्य माताजी की चरण रज को प्राप्त करने के लिए अनेक स्थानों पर आकर दर्शन कर एवं उनका अशीर्वाद प्राप्त कर अपने को धन्य माना।

जहाँ शरदपूर्णिमा का चंदा अमृत बिखेरता है, उसी अमृतकण के रूप में चंदा से पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हमें प्राप्त हुई हैं, जिनकी विशेष छठा सारे देश को लाभान्वित कर रही है। आज जिस तरफ भी पूज्य माताजी के चरण पड़ जाते हैं, उनके साथ-साथ हजारों, लाखों चरण चल पड़ते हैं। ऐसी पूज्य माताजी जो कि दीर्घकालीन तपस्या के द्वारा अपने आपको तीर्थ बना लिया है, उनका दर्शन, उनका पूजन सभी के लिए लाभकारी है और हम सभी की यही मंगल कामना है कि माताजी दीर्घकाल तक इसी प्रकार से सारे विश्व को आलोकित करती रहें। तुम जिओ हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार। इन्हीं कामनाओं के साथ पूज्य माताजी के चरणों में वंदामि।

-विजय कुमार जैन
(महामंत्री-तीर्थकर ऋषभदेव जैन विद्वत्महासंघ)
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

तीर्थ सुरक्षा के लिये किया प्रयास सराहनीय रहा
पहली बार अल्पसंख्यक आयोग ने बुलाया
तीर्थों के संरक्षण आदि की शिकायतें दूर करने के लिए

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की अगुवाई में भारत सरकार के अल्पसंख्यक आयोग के केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री जॉर्ज कुरियन जी के मुख्य आतिथ्य में जैन समुदाय के चल–अचल तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन एवं आधारभूत आवश्यकताओं के लिए दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के साथ जैन सम्प्रदाय के लिये संभवत आयोग के ३२ साल के कार्यकाल में पहली बैठक की, जिसमें माननीय मंत्री जी एवं उनकी पूरी टीम की उपस्थिति में जैन तीर्थों पर हो रहे अतिक्रमण, तीर्थों के अनेकों लंबित विवादों आदि पर सुरक्षा के लिये सरकार तक पहुंचाने की एक सफल शुरूआत हुई। तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जी जैन व उत्तर प्रदेश–उत्तरांचल अंचल के अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन जी के साथ चैनल महालक्ष्मी के सामूहिक प्रयासों से यह कार्यक्रम संभव हो पाया।

श्री जार्ज कुरियन जी ने कहा कि पूरे विश्व को अहिंसा का संदेश देने वाला जैन समुदाय शुद्धि को बहुत महत्व देता है। शरीर शुद्धि, मन शुद्धि,आहार, विचार शुद्धि, पर्यावरण शुद्धि इन ५ शुद्धि के सिद्धांत हैं। उन्होंने कहा कि हम सब एक माता के पुत्र हैं। आप अपनी समस्याओं को पहले स्वयं स्टडी कीजिए, फिर सोसायटी में रखिये, तब उसके बाद अथारिटी के पास आयेंगे, तो परिणाम अच्छे होंगे। कानून व संविधान के अंतर्गत आयोग आपकी सहायता करेगा। प्रशासनिक बातों पर निर्णय लिये जा सकते हैं। मंत्रालय सदा आपके साथ है, परन्तु आपकी शिकायतें आयोग के माध्यम से आनी चाहिए।

जैन समाज से एक चुटकी भरे अंदाज में मंत्री महोदय ने कहा कि विश्व में केवल एक धर्म है, जो धन–सम्पत्ति नहीं मांगता, जबकि सभी अन्य धर्म कहीं न कहीं धन मांगते हैं, पर जैनों में ऐसा नहीं और शायद इसी कारण अधिक सम्पत्ति जैनों के पास है, जैन अमीर हैं, जो अन्य समुदायों और सरकार को धन देती है, मांगती नहीं है।

आयोग के अध्यक्ष श्री इकबाल सिंह लालपुरा जी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में स्पष्ट कहा कि अगर किसी अल्पसंख्यक समुदाय के साथ कुछ अप्रिय घटना होती है, तो आयोग स्वयं एक्शन लेता है, जिन सभी का जन्म स्थान भारत में है। बातचीत से समस्यायें हल कीजिए, एक कदम पीछे हटकर, दो कदम आगे बढ़ाइये, हम अदालत में जाने की बजाय, आपस में हल कर लें। आज छोटी–छोटी बातों पर देश को बांटने की कोशिशें की जाती हैं। ये कहने में कोई संकोच नहीं कि जैन वो कम्यूनिटी है, जो कभी

आंदोलन नहीं करती, बहुत पीसफुल है, ये तो एक तरफ चुपचाप बैठकर स्वयं को ही सजा देती है।

आयोग में जैन सदस्य श्री धन्यकुमार जिन्नप्पा गुंडे जी ने जैन समाज की ओर से मुख्य समन्वयक रूप में काम कर रहे चैनल महालक्ष्मी को पूरा सहयोग दिया और तीर्थक्षेत्र कमेटी की बातों को ध्यान से सुना। यहां इस बात को यह कहने में कोई संकोच नहीं कि चैनल महालक्ष्मी की शिकायतों पर जैसे गिरनार तीर्थ पर जैन को दर्शन तथा गोपाचल पर्वत पर तीर्थंकर प्रतिमाओं के हो रहे क्षरण रोकने हेतु काफी प्रयास किये हैं और उनके अच्छे प्रभावी परिणाम सबके सामने शीघ्र आने की संभावना है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन जी ने दिगम्बर जैन मंदिर (जिनालय) के मॉडल को मंत्री महोदय, आयोग के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व जैन सदस्य डी.जी. गुण्डे जी को प्रतीक चिह्न के रूप में भेंट किया।

उ.प्र.–उत्तरांचल के अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन द्वारा विभिन्न तीर्थों से प्राप्त बाउण्ड्री व जीर्णोद्धार कार्य के लिये उचित फण्ड हेतु आये प्रतिवेदन मंत्री जी को दिये गये। आयोग द्वारा उन पर उचित कार्यवाही का आश्वासन दिया गया।

जैन तीर्थों पर एक प्रमुख सामूहिक पिटीशन जो तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा तैयार की गई, उसे सबके सम्मुख रखते हुए श्री शरद कुमार जैन चैनल महालक्ष्मी ने प्रधानमंत्री महोदय के शब्दों से शुरूआत की जो इसी वर्ष असम दौरे पर ०४ फरवरी २०२४ को कहे गये थे कि हमारे तीर्थ, हमारे मंदिर, हमारी आस्थाओं के स्थान हैं, ये सिर्फ दर्शनीय स्थल नहीं है, ये हजारों वर्षों की हमारी सभ्यता की यात्री की अमिट निशानियां हैं। कोई भी देश अपने अतीत को मिटा कर कभी प्रगति नहीं कर सकता। इसके साथ अपने तीर्थों के अतिक्रमण की पूरी जानकारी देते हुए गिरनार जी पर न्यायालय के आदेश का अनुपालन न होना, पावागढ़ में प्रतिमाओं के मूल स्वरूप को बदलने के प्रयास, मंदारगिरि पर्वत पर वासुपूज्य स्वामी की तपोस्थली पर अतिक्रमण, गोपाचल पर्वत पर तीर्थंकर मूर्तियों की अवमानना, सम्मेदशिखरजी – मधुबन को मांस–मद्य वर्जित क्षेत्र व उनके बोर्ड लगें, फिल्मों में जैन संस्कृति से खिलवाड़, उदयिगिरि–खण्डगिरि में जैन मूर्तियों के स्वरूप में बदलाव के प्रयास, दक्षिण भारत के जैन मंदिरों के स्वरूप को बदलकर अतिक्रमण, केसरिया जी पर कब्जे, जैन साधुओं के विहार में सुरक्षा व संरक्षण के लिये स्थान, जीर्ण धर्मशालाओं–मंदिरों का जीर्णोद्धार, जैन तीर्थक्षेत्रों व मंदिरों की भूमि पर बाउण्ड्री वाल, प्राचीन जैन साहित्य व पाण्डुलिपियों का संरक्षण व प्रकाशन, राजस्थान–म.प्र. के जैन बोर्ड की तरह राष्ट्रीय स्तर पर जैन कल्याण बोर्ड का गठन आदि की आवश्यकताओं पर आयोग का ध्यान

आकर्षित कर उचित कदम उठाने की मांग की।

श्री जय कुमार जैन (कोटा वाले) जी द्वारा तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण में तीर्थक्षेत्र कमेटी की १२२ वर्षों की भूमिका पर प्रकाश डाला। श्री संजय पापड़ीवाल (औरंगाबाद) ने कई जगह आयोग में जैन अधिकारी न होने से हो रही समस्या को दूर करने की बात कही।

श्री हंसमुख जैन गांधी (इन्दौर) ने रिमोट क्षेत्रों के तीर्थों तक पहुंचने के लिये सड़क कनेक्टीविटी, मुख्य मार्ग तक करने की बात कही तथा स्कॉलरशिप के लिये न्यूनतम सीमा बढ़ाने व गोम्मटगिरि जैसे तीर्थों पर अदालती आदेश की अनदेखी की बात भी कही।

श्री प्रद्युमन जैन (दिल्ली अंचल अध्यक्ष) ने हाइवे के पास के मंदिरों – तीर्थों के लिये साइनेज, नालंदा में जैन साहित्य के लिये स्कालरशिप की मांग रखी।

ब्र. जय निशांत भैयाजी ने पुरातत्व शिक्षण में जैन मूर्ति शिल्प कला, मूर्ति ग्रन्थों के समावेश करने के साथ रिमोट क्षेत्रों से मिलने वाली जैन मूर्तियों के संरक्षण की मांग रखी।

डॉ. जीवन प्रकाश जैन (हस्तिनापुर) ने अयोध्या में ऋषभदेव द्वार–स्मारक की बात रखी, जिस पर आयोग अध्यक्ष ने बताया कि इस बारे में केन्द्र व राज्य को पत्र भेजे जा चुके हैं।

इसके अलावा आयोग में हर धर्म के व्यक्ति को अध्यक्ष रोटेशन पर बनाया जाये (जैन अब तक वंचित हैं), गरीब जैनों के लिये ऋण मेला, सोशल मीडिया में दिगम्बर संतों की नग्नता के नाम पर ब्लॉक करने पर रोक, स्कूलों में सभी धर्मों की बेसिक जानकारी पर पाठ्यक्रम, ए.एस.आई साइट्स पर हो रहे, अतिमक्रमणों पर रोक, प्राकृत को आष्शनल विषय के रूप में शामिल करने आदि कई विषयों को आयोग के सामने रखा। श्री राजेन्द्र जैन (भोपाल) ने जैन धरोहरों के सर्वे, गरीब बच्चों की पढ़ाई, श्रीमती मीनू जैन ने तीर्थों के बाहर अतिक्रमण व असुरक्षा समाप्त करने की बात कही •ई। श्री प्रभात सेठी (गिरिडीह) ने शिखर जी में मांस–मद्य के निषेध के बोर्ड लगाने की बारे में कलेक्टर द्वारा गजट मांगे जाने पर अध्यक्ष महोदय ने कहा कि लिखित में दीजिये, तुरंत कार्यवाही करेंगे, वहां के मुख्य सचिव यहां आकर आश्वासन दे गये थे।

आयोग अध्यक्ष श्री इकबाल सिंह लालपुरा जी ने बताया कि शीघ्र आयोग एक सर्वधर्म पुस्तक प्रकाशित कर रहा है, जिसमें जैन धर्म को भी प्रमुखता से लिया जा रहा है और वह पुस्तक सबके लिये उपलब्ध कराई जाएगी तथा जिन बातों का यहां प्रतिवेदन दिये गये हैं, उन सब पर आयोग, आवश्यक कार्यवाही कर संबंधित विभाग को भेजेगा।

आयोग व मंत्रालय का धन्यवाद तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन जी द्वारा दिया गया। इस अवसर पर अन्य गणमान्य लोगों में जय कुमार उपाध्याये (श्रवणबेलगोला, एसके जैन (आईपीएस), विनोद जैन बाकलीवाल (मैसूर), जिनेन्द्र जैन (दौसा), भागचंद जैन (जयपुर), डॉ. राकेश जैन (मडावरा), नीरज जैन–पुनीत जैन (दिल्ली), विनोद बिहारी (अहिच्छेत्र), महेन्द्र जैन (टीकमगढ़), प्रमोद कासलीवाल (औरंगाबाद), महेन्द्र प्रकाश जैन (जयपुर), मनोज जैन (मेरठ), जीवेन्द्र जैन (गाजियाबाद), अनिल जैन (कनाडा), श्रीमती सुनंदा जैन, प्रवीन जैन (सान्ध्य महालक्ष्मी) आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। निश्चित ही तीर्थक्षेत्र कमेटी का तीर्थ सुरक्षा के लिये किया गया यह प्रयास सराहनीय व सही दिशा में महत्वपूर्ण कदम था। ...

प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित करने के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भारत सरकार को लिखा अनुमोदना पत्र

गत दिनांक २७ सितम्बर, २०२४ को दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय अल्पसंख्यक मंत्रालय में केन्द्रीय केन्द्रीय राज्यमंत्री जार्ज कुरियन जी एवं अध्यक्ष इकबाल सिंह जी लालपुरा एवं समस्त टीम के साथ हुई मीटिंग में प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित करने की मांग रखी गयी थी। जिसके पश्चात भारत सरकार द्वारा ०३ अक्टूबर २०२४ को प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित किया गया है। इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी ने माननीय प्रधान मंत्री को पत्र लिखकर अपना धन्यवाद ज्ञापित कर सराहना की है।

महाराष्ट्र सरकार की ओर से "जैन अल्पसंख्यक विकास महामंडल" का गठन एवं स्थापना

महाराष्ट्र राज्य के जैन समुदाय के हित को ध्यान में रखते हुए आपके द्वारा **"जैन अल्पसंख्यक विकास महामंडल"** के गठन की स्वीकृति देकर स्थापना की है आपके इस निर्णय से समस्त जैन समाज में उत्साह एवं उमंग है। आपके इस अहम निर्णय से महाराष्ट्र राज्य के सभी जैन तीर्थस्थलों-धार्मिक स्थलों के संरक्षण, जैन साधु-साध्वी मुनि-महाराजों की सुरक्षा, जैन धर्म संस्कृति और साहित्य का संवर्धन, जैन युवाओं के लिए उद्यमिता के लिए आर्थिक सहयोग, जैन विधवा महिलाओं के लिए सशक्तिकरण जैसे अन्य विषयों के लिए इस महामंडल की स्थापना से सहयोग मिलेगा। तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी ने जैन अल्पसंख्यक विकास मंडल के गठन एवं स्थापना के लिए महाराष्ट्र सरकार एवं भारत सरकार को सकल दिगम्बर जैन की ओर से अपना धन्यवाद ज्ञापित किया।

पर्वराज पर्युषण महापर्व के पावन अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को तीर्थसेवा संरक्षण हेतु दिगम्बर जैन समाज द्वारा प्राप्त सहायता

मुम्बई

१) श्री प्रशांतकुमार जैन	मुम्बई	१,००,००,०००/-
२) श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट,	मुम्बई	२५,००,०००/-
३) श्री तरुण चांदमल जैन	मुम्बई	२१,००,०००/-
४) श्री महेश जीवनलाल पारिख	मुम्बई	१,००,०००/-
५) श्री शैलेश महेन्द्रकुमार बंडी	मुम्बई	५१,०००/-
६) श्रीमती तृप्ति नितिन खेडकर	मुम्बइ	१५,००१/-
७) श्री योगेश चंद्रकांत कलमकर	मुम्बई	११,१११/-
८) श्रीमती नलिनी मिश्रीकोटकर	मुम्बई	१०,००१/-
९) श्री नविनचंद्र मुधोळकर	मुम्बई	५००१/-
१०) श्रीमती प्रतिक्षा किशोर डोनगांवकर	मुम्बई	५,००१/-
११) श्री प्रशांत पी.शाह	नवी मुम्बई	४,०००/-
		१,४८,०१,११५/-

महाराष्ट्र

१) श्री पार्श्वनाथ दिग.जैन खंडेलवाल मंदिर ट्रस्ट	नागपुर	१,००,०००/-
२) श्री १००८ चंद्रनाथ स्वामी काष्ठा संघ	कारंजा लाड	१,००,०००/-
३) श्री जैन सेवा दल एण्ड अनेकांत महिला मंडल	अमरावती	८३,९०१/-
४) श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर (सावरगांव)	उस्मानाबाद	६४,२७८/-
५) श्री मुकुंद सुंदरलालजी कलमकर	परभणी	५१,०००/-
६) श्रीमती नेहा निवास कस्तुरीवाले	नागपुर	५१,०००/-
७) श्री डॉ. निखिलजी बड़नेरकर	अमरावती	५१,०००/-
८) श्री देवकुमार रुखबदास चवरे	नागपुर	५०,०००/-
९) श्री पार्श्व प्रभू दिग.जैन मोठे मंदिर	नागपुर	३१,१५१/-
१०) श्री सुमतकुमार भंवरलाल जेजानी	नागपुर	२५,०००/-
११) श्रीमती शिल्पा अशिश अग्रवाल	नागपुर	२५,०००/-
१२) श्रीमती संतोषदेवी सुमतकुमार जेजानी	नागपुर	२५,०००/-
१३) श्री सुमतकुमार भंवरलाल जेजानी	नागपुर	२५,०००/-
१४) श्री विवेक नरेन्द्र चवरे	पुणे	२५,०००/-
१५) श्री शुभम एस.जैन असोसिएटस्		२१,०००/-
१६) श्री संकेत रुईवाले	कारंजा लाड	२१,११५/-
१७) श्री जैन गुरुकुल सेवा मंडळ	वाशिम	२१,०००/-
१८) श्री शरद रूपनारायण चौधरी (जैन)	नागपुर	२१,०००/-
१९) श्री हुकमचंदजी मगनलालजी जैन गहानकरी (सावला)नागपुर		२१,०००/-
२०) श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन बघेरवार संघनागपुर		२१,०००/-
२१) श्री चंद्रकांत देवलासी	नागपुर	२१,०००/-
२२) श्री अविनाश संगई एण्ड श्रीमती विजया संगई	अंजनगांव सुर्जी	५,०००/-
२३) श्री विशाल सुर्यकांत	देऊळगांवराजा	१५,०००/-
२४) श्री श्रेष्ठ दान गुप्त दान	नागपुर	१५,०००/-
२५) श्री रजत शरद चवरे	अकोला	११,१११/-
२६) श्री अनुप अरूण नांदगांवकर	कारंजा लाड	११,१११/-
२७) श्री निर्मलकुमार एम.कलमकर	परभणी	११,१११/-
२८) श्री विरेन्द्र हिराचंद खेडकर	नागपुर	११,१११/-
२९) श्री सचीन बंधु संजीव जगदीश संघई	अमरावती	११,१११/-
३०) श्री अयांश तेजस चवरे	कारंजा लाड	११,१११/-
३१) श्री रम्यक तुशार काले	अमरावती	११,१११/-
३२) श्री पद्माबाई महाजन	अमरावती	११,१११/-
३३) श्रीमती अशाताई वारकरी	अमरावती	११,१११/-
३४) श्रीमती ऊशाताई महाजन परिवार	अमरावती	११,१११/-
३५) श्रीमती शुभदा अतुल नांदगांवकर	कारंजा लाड	११,१११/-
३६) श्री प्रसन्न बंधु सुजित वर्धमान डोंगांवकर	नागपुर	११,०००/-
३७) श्री किर्तीकुमार जयकुमार देवलासी	अमरावती	११,०००/-
३८) श्री सुरेश एन.जोहरापुरकर	नागपुर	११,०००/-
३९) श्री गजकुमार चवरे	नागपुर	११,०००/-
४०) श्रीमती कांता बैद्य	नागपुर	११,०००/-
४१) श्रीमती चंद्रा भाभी पाटनी	नागपुर	११,०००/-
४२) श्रीमती पुष्पा गंगवाल	औरंगाबाद	११,०००/-
४३) नमोकार भक्ती मंडळ	नागपुर	११,०००/-
४४) श्री बोहरा बहु मंडळ/ रचना अजमेरा/योगिता पाटनी	नागपुर	११,०००/-
४५) श्री अविनाश मोतीलाल मुधोळकर	नागपुर	११,०००/-
४६) श्रीमती कांता जगदीश संगई	अमरावती	११,०००/-
४७) श्री कमलाकर प्रेमचंदजी जिन्तुरकर	जिन्तुरकर	११,०००/-
४८) श्री सौरभ अनिल मिश्रीकोटकर (यु.के.)	नागपुर	११,०००/-
४९) श्री आनंद अनिल मिश्रीकोटकर (हँगकाँग)	नागपुर	११,०००/-

५०) श्रीमती विजया महावीर मिश्रीकोटकर	नागपुर	११,०००/-
५१) श्री शिरिष खंडारे	औरंगाबाद	११,०००/-
५२) श्री अविनाश अग्रेकर	अमरावती	११,०००/-
५३) डॉ. लिना उदय चवरे	कारंजा लाड	११,०००/-
५४) श्री बघेरवाल सखी मंच अमरावती	अमरावती	१०,५००/-
५५) श्रीमती सुरभी महिला मंडळ	नागपुर	१०,४००/-
५६) श्री शशांक रुईवाले	ठाणे	१०,००१/-
५७) श्री गुप्त दान श्रेष्ठ दान	नागपुर	१०,०००/-
५८) श्री शशिकांत देवलासी	नागपुर	१०,०००/-
५९) श्री सौरभ बंधु राहुल संगई	अमरावती	१०,०००/-
६०) श्री अमरावती बारवाल युवा मंच	अमरावती	७,५००/-
६१) श्री बघेरवाल युथ क्लब	नागपुर	६,०५५/-
६२) श्री सुशिल रंजन जोहरापुरकर	कारंजा लाड	६,०००/-
६३) श्री विवेक प्रेमचंद देवलासी	कारंजा लाड	६,०००/-
६४) श्री सौरभ निवास कस्तुरीवाले	नागपुर	५,५५५/-
६५) श्री सिद्धांत निलय जिन्तुरकर एण्ड श्रीमती स्वाती जिन्तुरकर		५१५१/-
६६) श्रीमती प्रगती प्रमोद दर्यापुरकर	पुणे	५,१११/-
६७) श्री दिपक दर्यापुरकर	नागपुर	५,१००/-
६८) श्री सुनिलकुमार सेठी		५,१००/-
६९) श्री सुमित खेडकर	औरंगबाद	५,१००/-
७०) श्री अशुतोष रुईवाले	अमरावती	५,१००/-
७१) श्री सुचेनाजी सेठी	औरंगाबाद	५,१००/-
७२) श्री शिरिष डोंगांवकर	देऊळगांवराजा	५,००१/-
७३) श्री हुकमचंदजी एण्ड श्रीमती विजया खंडारे	देऊळगांवराजा	५,००१/-
७४) श्रीमती संध्या सुरेशकुमार डोनगांवकर	नागपुर	५,००१/-
७५) श्री आलोक चवरे	वाशिम	५,००१/-
७६) श्री दिपक खंडारे		५,००१/-
७७) श्री प्रियेश जैन डोनगांवकर	नागपुर	५,००१/-
७८) श्री प्रवीण भीसिकर	अमरावती	५,००१/-
७९) श्री अर्पित अक्षय रायबागकर	पुणे	५,००१/-
८०) सी.ए. निनाद धन्यकुमार नांदगांवकर	नागपुर	५,००१/-
८१) श्री राजेन्द्र मोतीलाल मिश्रीकोटकर	नागपुर	५,००१/-
८२) श्री महेन्द्र गुलाबचंद अग्रेवाल	नागपुर	५,००१/-
८३) श्रीमती हेमलता एण्ड श्री महेन्द्र पेंढारी	नागपुर	५,००१/-
८४) श्री राजेन्द्र मुधोळकर		५,००१/-
८५) श्रीमती तनुजा अतुल खेडकर, इतवारी	नागपुर	५,००१/-
८६) श्री स्वप्नील पी.पेंढारी	पुणे	५,००१/-
८७) श्री आकाश अरविंदजी फुलाडी	अमरावती	५,००१/-
८८) श्री प्रशांतजी डी.खंडारे	अमरावती	५,००१/-
८९) डॉ. सुरेन्द्रजी फुलाडी	अमरावती	५,००१/-
९०) डॉ. संजयजी फुलाडी	अमरावती	५,००१/-
९१) श्रीमती शिल्पा एण्ड सपना संगई	अमरावती	५,००१/-
९२) श्री रजत विनय दर्यापुरकर	अमरावती	५,००१/-
९३) श्री विवेक देवलासी	अमरावती	५,००१/-
९४) श्री नकुलजी फुलाडी	अमरावती	५,००१/-
९५) श्री प्रवीण फुलाडी	अमरावती	५,००१/-
९६) श्रीमती विद्या उल्हास संगई कस्तुरीवाले	अमरावती	५,००१/-
९७) श्रीमती पुनम अतुल खेडकर	नागपुर	५,००१/-
९८) श्री किशोर अभयकुमार मिश्रीकोटकर	नागपुर	५,००१/-
९९) श्री प्रदीपजी अग्रेकर	अमरावती	५,००१/-
१००) श्रीमती विधि वैभव पेंढारी	नागपुर	५,०००/-
१०१) श्री दिपक देवचंद अप्पा	अमरावती	५,०००/-
१०२) दिगम्बर जैन बन्नौरे समाज कार्य	अमरावती	५,०००/-
१०३) श्री संदीप गरिबे	नागपुर	५,०००/-
१०४) श्रीमती ज्योती पाटनी	नागपुर	५,०००/-
१०५) श्रीमती संध्या बैद्य	नागपुर	५,०००/-
१०६) श्री गुप्त दान श्रेष्ठ दान	नागपुर	५,०००/-
१०७) श्रीमती राखी बोहरा	नागपुर	५,०००/-
१०८) श्रीमती सरोज लोहाडे	जालना	५,०००/-
१०९) श्रीमती रिचा विनय चुडीवाल	पुणे	५,०००/-
११०) कु.सर्वा सुहासजी राऊळ	अमरावती	५,०००/-
१११) कु. कार्तिक सावन अलसपुरकर	अमरावती	५,०००/-
११२) श्रीमती प्रमिलाताई रंजन गहानकरी	अमरावती	५,०००/-
११३) श्री अशोक देवलासी	नागपुर	५,०००/-
११४) श्री चवरे महिला मंडळ	कारंजा लाड	५,०००/-
११५) डॉ. राजकुमारी बिल्टीवाला		५,०००/-
११६) श्री विवेक प्रेमचंद देवलासी	कारंजा लाड	५,०००/-
११७) श्रीमती पुष्पाताई रमेश पेंढारी	नागपुर	५,०००/-
११८) श्रीमती भारती पदम गंगवाल	सम्भाजीनगर	३,१००/-
११९) राजस डोनगांवकर	औरंगाबाद	३,१००/-
१२०) श्रीमती स्नेहल उदय मिश्रीकोटकर	थाणे	३,००१/-

१२१) श्रीमती स्मिता नितिन कासलीवाल	औरंगाबाद	३,०००/-
१२२) श्री अनिल चवरे दिलीप चवरे	कारंजा लाड	३,०००/-
१२३) श्री रविन्द्र डोनगांवकर	कारंजा लाड	२,५२५/-
१२४) श्री संदेश एण्ड श्रीमती स्वप्न संदेश कलमकर	परभणी	२,५०१/-
१२५) श्री मंगला सुरेश खेडकर	पुणे	२,५०१/-
१२६) श्री अशोक हिरासंगई नागरनाईक	नागपुर	२,५०१/-
१२७) श्रीमती कविता चुडीवाल	अहमदनगर	२,५००/-
१२८) श्री विनोद एस.जोहरापुरकर	नागपुर	२,५००/-
१२९) श्री एड.मनिष आर. जोहरापुरकर	नागपुर	२,५००/-
१३०) श्रीमती पंकजा दर्यापुरकर	नागपुर	२,१२१/-
१३१) श्री आराध्या अधिराजी काले	अमरावती	२,१२१/-
१३२) श्रीमती वैदिरा नीरज राऊळ	अमरावती	२,१२१/-
१३३) श्री शितिज सुनील फुलाडी	अमरावती	२,१२१/-
१३४) श्री सुभम नुतनजी कासलीवाल	नाशिक	२,१००/-
१३५) श्रीमती सुनिता जैन	नागपुर	२,१००/-
१३६) श्रीमती शिल्पा रोहित सोनी	औरंगाबाद	२,१००/-
१३७) श्रीमती वंदनाताई राजेन्द्रजी बन्नौरे	अमरावती	२,१००/-
१३८) कु. देवांशी सागर फुलाडी	अमरावती	२,१००/-
१३९) कु. विधवी अहिया राऊळ	अमरावती	२,१००/-
१४०) श्री राहुल दिलीप गुलालकरी	अमरावती	२,१००/-
१४१) श्री सिद्धेश अलसेट	अमरावती	२,१००/-
१४२) श्री विजयजी अजमेरा	औरंगाबाद	२,१००/-
१४३) श्री भरतजी ठोले	औरंगाबाद	२,१००/-
१४४) श्री आनंदजी पहाडे	औरंगाबाद	२,१००/-
१४५) श्री संजयजी पहाडे	औरंगाबाद	२,१००/-
१४६) श्रीमती जयश्री संघवी	औरंगाबाद	२,१००/-
१४७) श्री राजेश बड़जात्या	औरंगाबाद	२,१००/-
१४८) श्री सुशिल गंगवाल	औरंगाबाद	२,१००/-
१४९) श्री बोहरा परिवार	औरंगाबाद	२,१००/-
१५०) श्री ठोलिया परिवार	औरंगाबाद	२,१००/-
१५१) श्री श्रेणिकजी कासलीवाल	औरंगाबाद	२,१००/-
१५२) श्री दिनेश भैया	औरंगाबाद	२,१००/-
१५३) डॉ. अनुजा आनंद डोनगांवकर	देऊळगांवराजा	१,५०१/-
१५४) स्व. सुप्रभ राऊळ	अमरावती	१,५०१/-
१५५) श्री श्रेयांस सुदेश बज	नागपुर	१,२००/-
१५६) श्रीमती प्रेमाबाई पन्नालाल दगडा		१,१११/-
१५७) श्री देवेश प्रितेश फुलाडी	अमरावती	१,१११/-
१५८) कु.दिविजा सोहम राईबागकर	अमरावती	१,१११/-
१५९) श्रीमती प्रज्ञा प्रदीपजी महाजन	अमरावती	१,१११/-
१६०) श्रीमती वैदेही रवीन्द्र बन्नौरे	अमरावती	१,१११/-
१६१) श्री नंदकुमारजी काले	अमरावती	१,१११/-
१६२) श्रीमती निलिमा रविन्द्र फुकटे	अमरावती	१,१११/-
१६३) श्रीमती रुपाली सुदर्शन गुलालकरी	अमरावती	१,१११/-
१६४) श्री अजर्व राजेश गुलालकरी	अमरावती	१,१११/-
१६५) कल्याणी शुभम जैन	अमरावती	१,१११/-
१६६) प्रीती सुनील बन्नौरे	अमरावती	१,१०१/-
१६७) श्रीमती चंद्रकला बोहरा	नागपुर	१,१००/-
१६८) श्री सर्वेश बड़जात्या	नागपुर	१,१००/-
१६९) श्री गुप्त दान श्रेष्ठ दान	नागपुर	१,१००/-
१७०) श्रीमती मंजुशा राजेन्द्र बन्नौरे	अमरावती	१,१००/-
१७१) श्री देवेन्द्रजी मंगल	अमरावती	१,१००/-
१७२) श्री सौरभ राजेन्द्र फुलाडी	अमरावती	१,१००/-
१७३) श्रीमती अल्का अशोक गंगवाल	सम्भाजीनगर	१,१००/-
१७४) श्रीमती संगीता रमेश गंगवाल	सम्भाजीनगर	१,१००/-
१७५) श्रीमती हेमलता कांतीलाल ठोले	सम्भाजीनगर	१,१००/-
१७६) श्रीमती अर्चना स्वप्नील पाटनी	सम्भाजीनगर	१,१००/-
१७७) श्रीमती लता सुनिल अजमेरा	सम्भाजीनगर	१,१००/-
१७८) श्रीमती चंदा बड़जात्ये	औरंगाबाद	१,१००/-
१७९) श्री संजय कासलीवाल	औरंगाबाद	१,१००/-
१८०) श्री अजयजी जैन	औरंगाबाद	१,१००/-
१८१) श्री कुलभूषणजी जैन	औरंगाबाद	१,१००/-
१८२) श्री आनंदजी सेठी	औरंगाबाद	१,१००/-
१८३) श्री रवीन्द्रजी पाटनी	औरंगाबाद	१,१००/-
१८४) श्री श्रीपालजी पाटनी	औरंगाबाद	१,१००/-
१८५) श्री साधना पाटनी	औरंगाबाद	१,१००/-
१८६) श्री ओम संदेशजी कासलीवाल	औरंगाबाद	१,१००/-
१८७) श्री निरज संतोष पाटनी	औरंगाबाद	१,१००/-
१८८) श्रीमती शकुरबाई कासलीवाल	औरंगाबाद	१,१००/-
१८९) सी.ए. श्री लोकेश जैन	औरंगाबाद	१,१००/-

१९०) श्री योगेशजी लोहाडे	औरंगाबाद	१,१००/-
१९१) श्री जिनेन्द्र अजमेरा	औरंगाबाद	१,१००/-
१९२) श्री मोहनजी सोनी	औरंगाबाद	१,१००/-
१९३) श्री बाबुलालजी चांदवड		१,१००/-
१९४) श्री महावीर पी.शास्त्री	सोलापुर	१००८/-
१९५) स्वरा संकेत संगई	अमरावता	१,००१/-
१९६) श्रीमती छाया विजय कासलीवाल	सम्भाजीनगर	१,०००/-
१९७) श्रीमती अपुर्वा सुनील फुलाडी	अमरावती	५५१/-
१९८) श्री चैतन्य धुपटने	अमरावता	५०१/-
१९९) श्रीमती कुसुमलता रावका	नागपुर	५००/-
२००) श्रीमती कमला इन्दरचंद ठोले	सम्भाजीनगर	५००/-
२०१) श्री निलेश रमनलालजी कासलीवाल	नाशिक	२००/-
२०२) श्री भरत जी भोरे जैन	कारंजा लाड	११,०००/-
२०३) जैन सहयोगी मंडल	नागपुर	११,०००/-
२०४) श्री संतोष जी पेंढारी (महामंत्री) जी के मार्फ़त	नागपुर	२,४०,०००/-
		१९,७१,९५४/-

उत्तरप्रदेश-दिल्ली

१) श्री दिगम्बर जैन परिषद दिल्ली मार्फत श्री चक्रेश जैन	दिल्ली	५,००,०००/-
२) श्री अचल जैन बालबीर नगर	दिल्ली	३,००,०००/-
३) श्री प्रदीपकुमार जैन कत्थेवाले	कानपुर	२,५०,०००/-
४) श्री एम.एस.जैन	मेरठ	५७,३००/-
५) श्री सचीन जैन	बड़ौत	५१,०००/-
६) श्री एस.पी.जैन कालकाजी	दिल्ली	५१,०००/-
७) श्री अलोककुमार जैन	शामली	२१,०००/-
८) श्री अमित जैन कंदेलीयावाले	शामली	१५,०००/-
९) श्री आयुष जैन	बड़ौत	११,०००/-
१०) श्री आय.डी.जैन	दिल्ली	११,०००/-
११) श्री संदीप जैन	हरिद्वार	११,०००/-
१२) श्री विनयकुमार जैन (प्रिन्सीपल)	खेकड़ा	११,०००/-
१३) श्री अभिनव राजीव जैन	खुरजा	११,०००/-
१४) श्री आदिश्वर जैन	खुरजा	११,०००/-
१५) श्री अनिलकुमार-धरमवीर जैन	लखनऊ	११,०००/-
१६) श्री रमाकांत जैन सी.ए.	मेरठ	११,०००/-
१७) श्री जितेन्द्रकुमार जैन बसवाले	मेरठ	११,०००/-
१८) श्री समकीत राकेश जैन पी.एन.बी.	मेरठ	११,०००/-
१९) श्री विनित प्रकाश जैन	मेरठ	११,०००/-
२०) श्री एम.एस.जैन	मेरठ	११,०००/-
२१) श्री सुशिलकुमार जैन	मोदी नगर	११,०००/-
२२) श्री सी.पी.जैन	नोएडा	११,०००/-
२३) श्री दिनेश कुमार जैन, खंडेलवाल	रामपुर	११,०००/-
२४) श्री संजीवकुमार जैन	शामली	११,०००/-
२५) श्री हरदेश जवाहरलाल जैन	सिकन्द्राबाद	११,१००/-
२६) श्री राकेशकुमार जैन लेखपाल	सिकन्द्राबाद	११,०००/-
२७) श्री जवाहरलाल जैन	सिकन्द्राबाद	११,०००/-
२८) श्री रितेश जवाहरलाल जैन	सिकन्द्राबाद	११,०००/-
२९) श्री सुशीलकुमार जैन शुभम	सिकन्द्राबाद	११,०००/-
३०) श्री दीपक जैन	वाराणसी	११,०००/-
३१) श्री सोमेन्द्रकुमार जैन	आगरा	५,१००/-
३२) श्री प्रशांत जैन निमानी	बक्सवाहा	५,१००/-
३३) श्री प्रतीक जैन	देहरादुन	५,१००/-
३४) श्री रोशनलाल जैन, द्वारका	दिल्ली	५,१००/-
३५) श्री बालेश जैन	हरिद्वार	५,१००/-
३६) श्री पवन जैन, ३७,कोर्नाक	मेरठ	५,१००/-
३७) श्री राजेन्द्रकुमार जैन, पी.एन.बी.	मेरठ	५,१००/-
३८) श्री दीपक जैन वेस्टर्न कचहरी रोड	मेरठ	५,१००/-
३९) श्री अमित अजय जैन सारीवाले	शामली	५,१००/-
४०) श्रीमती मीनू अतुल जैन	सिकन्द्राबाद	५,०००/-
४१) श्री सुधीरकुमार जैन	सिकन्द्राबाद	५,०००/-
४२) श्री नेमचंद राजीवकुमार जैन	सिकन्द्राबाद	५,०००/-
४३) श्री यश जैन	बुलंदशहर	२,१००/-
४४) कु. प्रज्ञा जैन	बुलंदशहर	२,१००/-
४५) श्रीमती भावना जैन	बुलंदशहर	२,१००/-
४६) श्री जगेशकुमार जैन	लखनऊ	२,०००/-
४७) श्री मोहित जैन	शामली	२,०००/-
४८) श्री शशांक-नेहा जैन मंशा हॅन्डक्राफ्ट	मुज्जफरनगर	१,१००/-
४९) श्री शम्भू जैन	कोटा	५०१/-
		२ - १५,६०,२०१/-

मध्यप्रदेश

१) श्रीमती चित्रा संतोषकुमारजी जैन	इन्दौर	५,००,०००/-
२) श्री मनीष गोधा	इन्दौर	३,००,०००/-
३) स्वस्तिक		९९९/-
५) श्री राजेन्द्रकुमार धन्नालाल जैन	इन्दौर	१,००,०००/-
६) श्री पेसट्रोनिक्स लिमि.	इन्दौर	५०,०००/-
७) श्री दिगम्बर जैन समाज, सनावद	खरगौन	११,०००/-
८) श्री अखिलेश जैन दादुकिया	इन्दौर	११,०००/-
९) श्री अतुल अभिनव मुन्शी भोपाल	भोपाल	५,०००/-
		१३,२७,०००/-

राजस्थान

१) भगवान श्री अदिनाथ दिगम्बर जैन ट्रस्ट	जयपुर	२१,००,०००/-
२) श्री अनंतनाथ स्कॉयकॉन प्रा.लि.	जयपुर	२,००,०००/-
३) दिगम्बर जैन समाज मालपुरा क्षेत्र	टोंक	१,०५,००२/-
४) श्री नया मंदिर महिला समाज	सिकर	८९,८००/-
५) श्री सोहन सर्विस स्टेशन	जयपुर	५१,०००/-
६) श्री जैन समाज पचेवर	मालपुराटोंक	२१,०००/-
७) श्री केशरीमलजी पदमचंदजी अरुणजी-पिराका		११,०००/-
८) श्री दिगम्बर जैन समाज टोडारायसिंग		७,३००/-
९) श्रीमती रूपादेवी बड़जात्या	जयपुर	५,१००/-
१०) श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर खोदान	बाँसवारा	५,१००/-
११) श्री गुप्त सज्जन		५,१००/-
१२) श्री फतेहलालजी गोपालजी काला		५,१००/-
१३) श्री गुप्त सज्जन		३,१००/-
१४) श्री महावीरप्रसादजी महेशकुमारजी मनिषकुमारजी काला		३,१००/-
१५) श्रीमती सीमाजी, अजयजी दिवान		२,१००/-
१६) श्री गुप्त सज्जन		१,७००/-
१७) श्री महावीर प्रसादजी पहारी		२१,०००/-
१८) श्री श्रीचंदजी विकास गंगवाल		२१,०००/-
१९) श्री विनोदकुमारजी पांड्या		२१,०००/-
२०) श्री प्रकाश चंदजी पांड्या		५१,०००/-
२१) श्री मुकेशकुमारजी काला		२१,०००/-
२२) श्री कमलकुमारजी बाकलीवाल		२१,०००/-
२३) श्री पवनकुमारजी काला		११,०००/-
२४) श्री विनोदकुमारजी बड़जात्या		२१,०००/-
२५) श्री सरोजकुमारजी पांड्या		५,१००/-
२६) श्री नरेशकुमारजी पांड्या		२१,०००/-
२७) श्री दिनेशकुमारजी सेठी		२१,०००/-
२८) श्री प्रमोदकुमारजी सेठी		२१,०००/-
२९) श्री अशोककुमारजी जैन (आलूगोदाम)		२१,०००/-
३०) श्री विमलकुमारजी काला		११,०००/-
३१) श्री गोवर्धनलालजी पहारिया		११,०००/-
३२) श्रीमती पुष्पादेवी काला		५१,०००/-
३३) श्री संजयकुमारजी जैन (जोराहत)		११,०००/-
३४) श्री प्रकाशचंदजी काला (कच्छोर)		५,१००/-
३५) श्रीमती निशा जैन		११,०००/-
३६) श्री सौरभ गौरभ जैन		५,१००/-
३७) श्री अर्पित सेठी		५,१००/-
३८) श्री अजय बिनायक्या		११,०००/-
३९) श्री संजयकुमार जैन		१,१००/-
४०) श्री सुबोधकुमारजी सरावगी		१,१००/-
४१) श्री अशोक आशीष सोगानी,	जयपुर	११,०००/-
४२) श्री राजकुमार नरेश पाटनी,	जयपुर	११,०००/-
४३) श्री दिगम्बर जैन मंदिर यति यशोनन्द जी, चौड़ा रास्ता,	जयपुर	३१,०००/-
४४) श्री राजकुमारजी रचितजी कोठ्यारी,	जयपुर	११,०००/-
		३०,८०,१०२/-

आप सभी दानदातारों के प्रति भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की मीटिंग संपन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की **पदाधिकारी परिषद की बैठक शुक्रवार दिनांक २७ सितम्बर २०२४ को प्रातः १०:०० बजे से होटल मोनाग्रांड, दिल्ली में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन की अध्यक्षता में संपन्न** हुई । राष्ट्रीय अध्यक्ष की अनुमति से दिल्ली अंचल की ओर से स्वागत समारोह का कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें दिल्ली अंचल द्वारा सभी महानुभावों को दुपट्टा एवं हार पहनाकर स्वागत किया गया । कार्यक्रम का संचालन दिल्ली अंचल के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री प्रद्युमन जैन ने किया। उक्त बैठक में महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए साथ ही सम्मेदशिखर जी केस के बारे में विस्तार से चर्चा एवं रूप रेखा बनाई गयी । इस दरम्यान भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के २२ अक्टूबर २०२६ को पूर्ण होने जा रहा १२५ वें स्थापना वर्ष को धूम-धाम से मनाने के बारे में विस्तृत जानकारी एवं योजना के बारे विचार विमर्श किया गया। इस मीटिंग में जैन समाज एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी को सुदृढ बनाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने के बारे में सुझावों की जानकारी दी गयी।

आयोजित इस मीटिंग में श्री जम्बूप्रसाद जी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री संजय पन्नालाल पापड़ीवाल, पैठण राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जय कुमार जैन कोटावाले, लखनऊ, राष्ट्रीय मंत्री, श्री हंसमुख जैन (गांधी) इन्दौर, राष्ट्रीय मंत्री श्री विनोद कुमार बाकलीवाल, मैसूर अध्यक्ष – कर्नाटक अंचल श्री जवाहरलाल जैन, सिकंदराबाद (उ.प्र.) अध्यक्ष – उत्तरप्रदेश उत्तराखंड, श्री प्रद्युमन कुमार जैन, दिल्ली अध्यक्ष – दिल्ली अंचल श्री जैनेश जैन झांझरी इंदौर, चेयरमेन – तीर्थसर्वेक्षण समति , श्री प्रमोद कुमार कासलीवाल, औरंगाबाद , चेयरमेन – तीर्थ अनुदान समिति, श्री राजकुमार घाटे, इंदौर, प्रतिनिधि- श्री डी.के.जैन (अध्यक्ष-मध्यांचल), श्री प्रभात सेठी गिरिडीह मंत्री – पूर्वांचल, श्री मनोज जैन, मेरठ महामंत्री – उत्तरप्रदेश उत्तरांचल, श्री सुनील जैन, दिल्ली महामंत्री – दिल्ली अंचल, श्री शरद जैन दिल्ली सांध्य महालक्ष्मी एवं विशेष आमंत्रित के रूप में श्री प्रदीप जैन, गिरारगिरि क्षेत्र, श्री राजेन्द्र जैन (TI) भोपाल, श्री महेंद्र जैन अध्यक्ष - अहार जी क्षेत्र, श्री पुष्पेन्द्र जैन काशीपुर उत्तराखंड उपथित रहे।

PAVIT®
Inspired Mindscapes

AVAILABLE SIZES : 600x1200mm | 600x600mm | 600x300mm | 400x400mm | 300x300mm | 200x200mm | 100x100MM

Pavit Ceramics Pvt. Ltd.
303, Camps Corner-II, Near Prahladnagar Garden, Satellite,Ahmedabad-380015, Gujarat, INDIA
Ph : +91 79 40266000, info@pavits.com, www.pavits.com Toll Free : 1800 233 3366 (9.30am to 6.30pm)

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/ 2022-24
Jain Tirth vandana, English-Hindi October 2024
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/ 2022-24
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.